

दर्शनशास्त्र विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला
Department of Philosophy
School of Humanities and Social Sciences



स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
दर्शनशास्त्र
Syllabus for Master of Arts
Philosophy
2026-27

तीन वर्षीय स्नातक कार्यक्रम के बाद दो वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम
Two-year Postgraduate Programme after Three-year Undergraduate Programme
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार
As per the National Education Policy 2020 Curriculum Framework

डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
सागर, मध्यप्रदेश – 470003

Dr. Harisingh Gaur Vishwavidyalaya
(Central University)
Sagar, Madhya Pradesh – 470003

विभाग के बारे में

स्थापना: 18 जुलाई 1946

- दर्शनशास्त्र विभाग विश्वविद्यालय के सबसे पुराने विभागों में एक है। इसकी स्थापना विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस 18 जुलाई 1946 को ही हुई थी।
- इस विभाग के संस्थापक अध्यक्ष प्रो० शिव शंकर रॉय थे।
- विभाग ने वर्ष 1946 में स्नातक एवं 1950 में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू किया गया।
- पीएच.डी. अध्ययन का कार्यक्रम वर्ष 1952 में शुरू किया गया।
- एम.फिल. अध्ययन का कार्यक्रम वर्ष 1990 में शुरू किया गया।
- प्रो० रासबिहारी दास, प्रो० एस.के. सक्सेना, प्रो० शिवजीवन भट्टाचार्य, प्रो० प्रतापचन्द्र, प्रो० अर्जुन मिश्र और प्रो० दयाकृष्ण जैसे प्रख्यात आचार्यों ने इस विभाग में अपनी सेवाएं दी हैं।
- देश में भारतीय दर्शन के उत्थान हेतु प्रो० अर्जुन मिश्र के निर्देशन में यू०जी०सी० द्वारा वित्तपोषित “भारतीय दर्शन बृहत्कोश” परियोजना के रूप में दर्शनशास्त्र विभाग का महत्वपूर्ण योगदान है।

About the Department

Established on 18 July 1946

- The Department of Philosophy is one of the founding departments of the University. It was established on 18th July 1946 when the University was established.
- Prof. Shiva Shankar Roy was the founding Head of the Department.
- The department started undergraduate course in philosophy in 1946 and postgraduate course in 1950.
- The PhD program was started in the year 1952.
- M.Phil. program was introduced in the year 1990.
- Eminent Professors like Prof. Rash Bihari Das, Prof. S.K. Saxena, Prof. Shivjivan Bhattacharya, Prof. Pratap Chandra, Prof. Arjun Mishra, and Prof. Daya Krishna have also served this department.
- The department has contributed to the study of Indian philosophy in the country in terms of “Bhārtiya Bṛhat Darśanakośa” UGC project under the directorship of Prof. Arjun Mishra.

दृष्टि (विज़न)

भारतीय और भारतेतर दर्शनों में शिक्षण और अनुसंधान में उत्कृष्टता प्राप्त करना तथा आलोचनात्मक चिन्तन और नैतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध प्रगाढ़ करना

VISION

Achieving Excellence in Teaching and Research in Indian as well as Non-Indian Philosophy and Strengthening the bond with Students through Promotion of Critical Thinking and Moral Sensitivity

उद्देश्य (मिशन)

- स्थापित वैश्विक मानकों और परम्पराओं के अनुसार दर्शनशास्त्र में अनुसंधान करना
- बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से अन्वेषण की भावना का विकास करना
- वांछनीय परिक्षेत्रों में व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना

MISSION

- Pursuing Research in Philosophy as per the Established Global Standards and Practices
- Developing the Spirit of Inquiry through Multidisciplinary Education
- Inspiring the Students to Achieving Excellence in Desirable Spheres of Individual and Collective Efforts

आधारभूत मूल्य

- शैक्षणिक सत्यनिष्ठा और दायित्वबोध
- विभिन्न दृष्टिकोणों के लिए सम्मान और सहिष्णुता
- राष्ट्रीय और वैश्विक महत्त्व के विषयों पर ध्यान
- बौद्धिक उत्कृष्टता और रचनात्मकता की सराहना
- समाजोपयोगी अनुसंधान की प्रवृत्ति

CORE VALUES

- Academic Integrity and Accountability
- Respect and Tolerance for Various Perspectives
- Attention to the issues of National as well as Global Relevance
- Appreciation of Intellectual Excellence and Creativity
- Aptitude of Research with Social Utility

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर आधारित पाठ्यचर्या की रूपरेखा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने देश को आत्मनिर्भर और वैश्विक बनाने के लिए सम्पूर्ण रूप से सक्षम व्यक्तियों को विकसित करने की संकल्पना की है। इसी भावना के साथ हमने दर्शनशास्त्र विभाग में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित की है। इस नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए दर्शनशास्त्र विभाग ने विषय और अध्ययन की विधा को चुनने की स्वतंत्रता का अवसर उपलब्ध कराया है। अध्ययन की विधा के रचनात्मक संयोजन हेतु अकादमिक विकल्प के साथ-साथ प्रवेश और निकास के अनेक अवसर का भी प्रावधान किया गया है। विद्यार्थियों को आनुभविक अधिगम के साथ-साथ बहु-विषयक अध्ययन के अवसर प्रदान किये गये हैं। दर्शन की विधा में दिन-प्रतिदिन उपयोग में आने वाले व्यावहारिक ज्ञान के प्रशिक्षण पर बल दिया गया है।

Curriculum outline based on the National Education Policy-2020

The National Education Policy-2020 envisages developing well-rounded individuals to make the country self-reliant and global. It is in this spirit that we have developed a curriculum framework in the Department of Philosophy to incorporate the goals of the National Education Policy-2020. To achieve the objectives of the National Education Policy, the Department of Philosophy has provided the opportunity of freedom to choose the subject and mode of study. Along with academic options, provision has been made for creative combination of modes of study as well as multiple entry and exit opportunities. Students have been provided opportunities for experiential learning as well as multidisciplinary study. In the discipline of philosophy, emphasis has been laid on the training of practical knowledge that is used in day-to-day life.

दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम के उद्देश्य

पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी:

1. दर्शन की विभिन्न धाराओं में निहित व्यापक विचारों को समझ सकेंगे।
2. नीतिशास्त्र, ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, सौंदर्यशास्त्र और तर्कशास्त्र की मूल विषय-वस्तु को समझ सकेंगे।
3. दर्शनशास्त्र में प्रतिपादित अवधारणाओं, सिद्धांतों और तकनीकों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।
4. संभावित समाधान खोजने के लिए सामाजिक वास्तविकताओं और समस्याओं को समझने के लिए दार्शनिक अंतर्दृष्टि का उपयोग कर सकेंगे।
5. दर्शनशास्त्र की पद्धति और मूलभूत प्रकृति को समझकर उसका मूल्यांकन कर सकेंगे।
6. दर्शनशास्त्र और अन्य विषयों के बीच अन्तर्सम्बन्ध को पहचान सकेंगे।
7. मौलिक दार्शनिक ग्रंथों को समझने का प्रयास कर सकेंगे।
8. विभिन्न संस्कृतियों में विकसित दार्शनिक विधाओं को समझ सकेंगे।
9. दार्शनिक ज्ञान का जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग कर सकेंगे।
10. दर्शनशास्त्र में शोध विषयों और प्रश्नों की पहचान कर सकें और उन्हें कुशलता के साथ प्रस्तुत कर सकेंगे।
11. आधुनिक युग की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय समस्याओं का दार्शनिक विश्लेषण करके समाधान प्रस्तुत कर सकेंगे।
12. ज्ञान की परम्परा का संरक्षण एवं संवर्धन करते हुये समाज के विकास में योगदान दे सकेंगे।

Philosophy Program Objectives

After successful completion of the Program, students will be able to:

1. Understand the broad ideas contained in various streams of philosophy.
2. Understand the basic subject matter of ethics, epistemology, metaphysics, aesthetics, and logic.
3. Critically analyze the concepts, theories, and techniques propounded in philosophy.
4. Use philosophical insights to understand social realities and problems to find possible solutions.
5. Understand the methodology and basic nature of philosophy and evaluate it.
6. Recognize the interrelationships between philosophy and other subjects.
7. Understand the fundamental philosophical texts.
8. Understand the philosophical insights developed in different cultures.
9. Use philosophical knowledge in different spheres of life.
10. Identify research topics and questions in philosophy and present them efficiently.
11. Philosophically analyze and present solutions to social, political, economic, cultural, and environmental problems of the modern era.
12. Contribute to the development of society by preserving and promoting the tradition of knowledge.

पाठ्यक्रम के विशिष्ट उद्देश्य

1. इस पाठ्यक्रम के स्नातकों को विभिन्न दार्शनिक परंपराओं से संबंधित अवधारणाओं और सिद्धांतों को समझने के लिए अपने कौशल को विकसित और संस्कृत करने के लिए तैयार किया जाएगा।
2. इस पाठ्यक्रम के स्नातकों को भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रेरित सामाजिक रूप से प्रासंगिक अनुसंधान करने की योग्यता के साथ दार्शनिक समस्याओं का विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक परीक्षण करने में सक्षम बनाया जाएगा।
3. इस पाठ्यक्रम के स्नातक विभिन्न सामाजिक और नैतिक संदर्भों में विश्लेषणात्मक सोच और तार्किक क्षमता का उपयोग करने में सक्षम होंगे।

Program Specific Objectives

1. Graduates of this course will be prepared to develop and hone their skills to understand concepts and theories related to different philosophical traditions.
2. Graduates of this course will be prepared to analytically, and critically examine philosophical problems with the ability to conduct socially relevant research inspired by the Indian knowledge tradition.
3. Graduates of this course will be able to use analytical thinking and logical abilities in various social and ethical contexts.

पाठ्यक्रम-संरचना (Structure of the Program)

स्तर – 6 (Level - 6)						
प्रथम वर्ष (सेमेस्टर I) First Year (Semester I)						
पाठ्यक्रम की प्रकृति Nature of Course	विषय कोड Course Code	विषय शीर्षक Course Title	क्रेडिट Credits			
			L	T	P	C
Discipline Specific Major	PHL-DSM-121	पारम्परिक भारतीय दर्शन Traditional Indian Philosophy	5	1	0	6
Discipline Specific Major	PHL-DSM-122	पारम्परिक पाश्चात्य दर्शन Traditional Western Philosophy	5	1	0	6
Discipline Specific Elective	PHL-DSE-121	नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य) Ethics (Indian and Western)	3	1	0	4
Generic Elective (GE)	PHL-GE-121	दर्शनशास्त्र में शोध प्रविधि Research Methodology in Philosophy	3	1	0	4
कुल Total			20			

स्तर – 6 (Level - 6)						
प्रथम वर्ष (सेमेस्टर II) First Year (Semester II)						
पाठ्यक्रम की प्रकृति Nature of Course	विषय कोड Course Code	विषय शीर्षक Course Title	क्रेडिट Credits			
			L	T	P	C
Discipline Specific Major	PHL-DSM-221	समकालीन भारतीय दर्शन Contemporary Indian Philosophy	5	1	0	6
Discipline Specific Major	PHL-DSM-222	समकालीन पाश्चात्य दर्शन Contemporary Western Philosophy	5	1	0	6
Discipline Specific Elective	PHL-DSE-221	सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन Social and Political Philosophy	3	1	0	4
Generic Elective (GE)	PHL-GE-221	प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र Symbolic Logic	3	1	0	4
कुल Total			20			

L-6 Exit with Post Graduate Diploma in Philosophy

स्तर – 6.5 (Level – 6.5) द्वितीय वर्ष (सेमेस्टर III) Second Year (Semester III)						
पाठ्यक्रम की प्रकृति Nature of Course	विषय कोड Course Code	विषय शीर्षक Course Title	क्रेडिट Credits			
			L	T	P	C
Discipline Specific Major	PHL-DSM-323	अनुप्रयुक्त दर्शन Applied Philosophy	5	1	0	6
Discipline Specific Major	PHL-DSM-324	विज्ञान का दर्शन Philosophy of Science	5	1	0	6
Discipline Specific Elective	PHL-DSE-321	अधिनीतिशास्त्र Metaethics	3	1	0	4
Generic Elective (GE)	PHL-GE-321	भारतीय तर्कशास्त्र Indian Logic	3	1	0	4
कुल Total			20			

स्तर – 6.5 (Level – 6.5) द्वितीय वर्ष (सेमेस्टर IV) Second Year (Semester IV)						
पाठ्यक्रम की प्रकृति Nature of Course	विषय कोड Course Code	विषय शीर्षक Course Title	क्रेडिट Credits			
			L	T	P	C
Discipline Specific Elective	PHL-DSE-421	धर्म दर्शन Philosophy of Religion	3	1	0	4
Discipline Specific Major	PHL-DSM-423	Dissertation	0	16	0	16
कुल Total			20			

L-6.5 Exit with Master Degree in Philosophy

मूल्यांकन :

- कार्यक्रम में विद्यार्थी का मूल्यांकन कार्यक्रम की पूरी अवधि के दौरान एक रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन यानी मिड प्रथम एवं मिड द्वितीय और अंतिम सेमेस्टर परीक्षाओं में किया जायगा।
- अंतिम सेमेस्टर परीक्षा में बैठने के योग्य होने के लिए विद्यार्थी को कक्षा में 75% उपस्थित के साथ दोनों मध्य-सेमेस्टर परीक्षाओं में उपस्थित होना आवश्यक है।

परीक्षा योजना इस प्रकार होगी:

सेमेस्टर परीक्षा	अंक विभाजन
मिड प्रथम	20
मिड द्वितीय	20
अंतिम सेमेस्टर परीक्षा	60
कुल	100

Evaluation:

- Students in the program will be assessed through a formative and summative assessment throughout the duration of the program i.e. Mid-First, Mid-Second and End Semester examinations.
- To be eligible to appear for the End Semester examination, the student must appear in both the Mid-Semester examinations with 75% attendance in the class.

Semester Exam	Digit division
Mid-I	20
Mid-II	20
End Semester Exam	60
Total	100

पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSM-121	पारम्परिक भारतीय दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन	बाह्य मूल्यांकन	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को परम्परागत भारतीय दर्शन के प्रमुख सम्प्रदायों की तत्त्वमीमांसीय व ज्ञानमीमांसीय अवधारणाओं से परिचित कराना है।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी परम्परागत भारतीय दर्शन के प्रमुख सम्प्रदायों के मौलिक सिद्धान्तों और जीवन मूल्यों से परिचित हो जायेगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी :

- वैदिक एवं अवैदिक दर्शन के उद्भव एवं विकास तथा भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताओं से परिचित हो जायेगा।
- को सांख्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं योग दर्शन के अष्टांग योग, ईश्वर विचार आदि का बोध हो जायेगा।
- को न्याय-वैशेषिक दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का बोध हो जायेगा।
- बौद्ध एवं जैन दर्शन के प्रमुख तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्तों का बोध हो जायेगा एवं बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय से परिचित हो जायेगा।
- मीमांसा दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त की प्रमुख ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय अवधारणाओं से परिचित होगा। रामानुज के मायावाद का खण्डन एवं मोक्ष विचार से परिचित हो जायेगा।

विषय वस्तु

इकाई 1: वैदिक, अवैदिक एवं आगमिक दर्शनों का उद्भव और विकास, भारतीय दर्शन की दो धाराएँ, भारतीय दर्शन की मुख्य विशेषताएँ
(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: सांख्य-योग दर्शन

सांख्य दर्शन का द्वैतवाद - पुरुष एवं प्रकृति की अवधारणा, सत्कार्यवाद, विकासवाद का सिद्धान्त, योग दर्शन में चित्त का स्वरूप और परिणाम, चित्तभूमि, चित्तवृत्ति, अष्टांगयोग, ईश्वर-विचार
(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: न्याय-वैशेषिक दर्शन

पदार्थ-व्यवस्था, परमाणुवाद, आरम्भवाद, ईश्वर की अवधारणा, प्रमाण-चतुष्टय, अपवर्ग-विचार
(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: बौद्ध एवं जैन दर्शन

बौद्ध दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त - नैरात्म्यवाद, क्षणिकवाद और प्रतीत्यसमुत्पाद, बौद्ध दर्शन के चतुर्विध सम्प्रदायों का परिचय - वैभाषिक, सौत्रान्तिक, माध्यमिक एवं योगाचार विज्ञानवाद, जैन दर्शन - द्रव्य सिद्धान्त, अनेकान्तवाद, स्याद्वाद
(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: मीमांसा दर्शन और अद्वैत वेदान्त

मीमांसा दर्शन - परिचय, वेद की अपौरुषेयता, धर्म, अपूर्व, विधि, अर्थवाद, प्रामाण्यवाद, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद, अद्वैत वेदान्त - परिचय, ब्रह्म की अवधारणा, ब्रह्म और आत्मा का ऐक्य, अध्यास-अविद्या-माया, विवर्तवाद, सत्ता के स्तर, रामानुज द्वारा मायावाद का खण्डन, मोक्ष-विचार
(18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. भारतीय दर्शन, चन्द्रधर शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2013
2. भारतीय दर्शन, चटर्जी एवं दत्ता, हिन्दी अनुवाद, पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2020
3. भारतीय दर्शन, सम्पा. एन.के. देवराज, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2002
4. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, एम. हिरियन्ना, हिन्दी अनुवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. भारतीय दर्शन का इतिहास, एस.एन. दासगुप्ता, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2012
2. भारतीय दर्शन, बलदेव उपाध्याय, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, 2016
3. केन्द्रीय बौद्ध दर्शन, टी.आर.व्ही. मूर्ति (द्वितीय अध्याय : भारतीय दर्शन की दो परम्पराएँ), हिन्दी अनुवाद सच्चिदानन्द मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2020
4. भारतीय दर्शन (2 vols.), राधाकृष्णन, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, 2013
5. भारतीय दर्शन की चिंतनधारा, राम मूर्ति शर्मा, मणिद्वीप, दिल्ली, 2001

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSM-121	Traditional Indian Philosophy	5	1	0	6	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are required to learn the metaphysical and epistemological concepts of the major schools of traditional Indian philosophy.
- 2. Course Learning Outcomes:** After successful study of this course, the student will become familiar with the fundamental principles and values of the major schools of traditional Indian philosophy.

After successfully completing this course, the students:

- (i) Will become familiar with the origin and development of Vedic and Non-vedic philosophy and the general characteristics of Indian philosophy.
- (ii) Will understand the metaphysics of Sāṃkhya philosophy and Aṣṭāṅgayoga of Yoga philosophy, idea of God etc.
- (iii) Will understand the metaphysics and epistemology of Nyāya-Vaiśeṣika philosophy.
- (iv) Will understand the main metaphysical principles of Buddhist and Jaina philosophy and will become familiar with the four schools of Buddhist philosophy.
- (v) Will know the main epistemological and metaphysical concepts of Mīmāṃsā philosophy and Advaita Vedānta and Ramanuja's refutation of Māyāvāda and the idea of liberation.

Course Content

Unit I: Origin and Evolution of Vedic, Non-vedic, and Āgamic Philosophy, two streams of Indian philosophy, main features of Indian philosophy (18 lectures/hours)

Unit II: Sāṃkhya-Yoga philosophy

Dualism of Sāṃkhya philosophy-the Concept of Puruṣa and Prakṛti, Satkāryavāda, Theory of Evolution, Nature and Modifications of Citta in Yoga philosophy, States of Citta, Functions of Citta, Aṣṭāṅgayoga, Idea of God (18 lectures/hours)

Unit III: Nyāya-Vaiśeṣika Philosophy

The Categories of Entities, Atomism, Ārambhavāda, the Concept of God, Four Means of Knowing, the Idea of Apavarga (18 lectures/hours)

Unit IV: Buddhist and Jaina Philosophy

Basic Principles of Buddhist philosophy - Selflessness, Momentariness and Pratītyasamutpāda, Fourfold Sects of Buddhist philosophy – Vaibhāṣika, Sautrāntika, Mādhyamika and Yogācāra Vijñānavāda, Jaina Philosophy - Dravya Siddhānta, Anekāntavāda, Syādvāda (18 lectures/hours)

Unit V: Mīmāṃsā Philosophy and Advaita Vedānta

Mīmāṃsā Philosophy - Introduction, Apauruṣeyatā of Veda, Dharma, Apūrva, Vidhi, Arthavāda, Prāmāṇyavāda, Abhihitānvayavāda and Anvitābhīdhānavāda, Advaita Vedānta - Introduction, Concept of Brahma, Identity of Brahma and Soul, Adhyāsa-Avidyā-Māyā, Vivartavāda, Grades of Reality, Ramanuja's Refutation of Māyāvāda, Idea of Mokṣa (18 lectures/hours)

Essential Readings:

1. Outlines of Indian Philosophy, M. Hiriyanna, MLBD Publishes, New Delhi, 2014
2. An Introduction to Indian Philosophy, Chatterjee & Datta, University of Calcutta, 1948
3. Critical Survey of Indian Philosophy C.D. Sharma, MLBD Publishers, New Delhi, 2013
4. Fundamentals of Indian Philosophy, R. Puligandla, DK. Printworld, New Delhi, 2008.

Suggested Readings:

1. Indian Philosophy, Jadunath Sinha, MLBD, 2016
2. A History of Indian Philosophy, S.N. Dasgupta, Rupa Publication, India, 2018
3. The Essentials of Indian Philosophy, M. Hiriyanna, MLBD, New Delhi, 2015
4. Indian Philosophy (2 vols.), S. Radhakrishnan, Oxford University Press, 2008
5. Structural Depths of Indian Thought, P.T. Raju, State University of New York Press, Albany, 1985
6. Philosophy Articles from ePG Pathshala available at <https://epgp.inflibnet.ac.in>

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSM-122	पारम्परिक पाश्चात्य दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

1. **पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को पारम्परिक पाश्चात्य दर्शन के ग्रीकयुग, मध्ययुग, बुद्धिवाद, अनुभववाद एवं समीक्षावाद की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा से परिचित कराना है।
2. **अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक अध्ययन से विद्यार्थियों में परम्परागत पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का बोध हो जायेगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी :

- (i) को ग्रीक दर्शन की प्रमुख विशेषताओं के साथ सुकरात, प्लेटो की ज्ञानमीमांसा सुकरात के नीतिशास्त्र व अरस्तू की तत्त्वमीमांसा का ज्ञान हो जायेगा।
- (ii) मध्ययुगीन प्रमुख दार्शनिकों के ईश्वर और जगत संबंधी विचार को जान पायेगा।
- (iii) को बुद्धिवाद की प्रमुख विशेषताओं के साथ बुद्धिवादी दार्शनिकों की तत्त्वमीमांसीय सिद्धान्त एवं मन-शरीर सम्बन्ध की समस्या संबंधी सिद्धान्तों का बोध हो जायेगा।
- (iv) को अनुभववाद की ज्ञानमीमांसीय एवं तत्त्वमीमांसीय समस्याओं का बोध हो जायेगा।
- (v) को काण्ट के समीक्षावाद का बोध हो जायेगा।

विषय वस्तु

इकाई 1: ग्रीक दर्शन: परिचय और प्रमुख विशेषताएँ, सुकरात की ज्ञानमीमांसा और नीतिशास्त्र, प्लेटो की ज्ञानमीमांसा और प्रत्यय सिद्धान्त, अरस्तू का द्रव्य एवं आकार सिद्धान्त (18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: मध्ययुगीन दर्शन: परिचय और प्रमुख विशेषताएँ, ऑगस्टाइन, एन्सेलम, और एक्वीनास के जगत एवं ईश्वर संबंधी विचार (18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: बुद्धिवाद : आधुनिक दर्शन का उदय और उसकी प्रमुख विशेषताएँ, देकार्त – दार्शनिक-पद्धति, 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' (कॉजिटो इगो सम); स्पिनोजा - द्रव्य सिद्धान्त, सर्वेश्वरवाद; लाइबनिज - चिदणुवाद, अविभेदनीय की अनन्यता; मन और शरीर संपर्क संबंधी सिद्धान्त - अन्तर्क्रियावाद, समानान्तरवाद और पूर्वस्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त (18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: अनुभववाद : परिचय और प्रमुख विशेषताएँ, जॉन लॉक - ज्ञानमीमांसा, अमूर्त प्रत्ययों का खंडन, बर्कले – 'सत्ता दृश्यता है' (एस्से-ईस्ट-पर्सिपी), आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद, ह्यूम - ज्ञानमीमांसा, सन्देहवाद (18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: समीक्षात्मक दर्शन: पृष्ठभूमि, काण्ट द्वारा बुद्धिवाद और अनुभववाद का समन्वय, संश्लेषणात्मक प्रागनुभविक निर्णय, बुद्धि की कोटियाँ, देश और काल की अवधारणा (18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. पाश्चात्य दर्शन की रूपरेखा, बी. एन. सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2024
2. पाश्चात्य दर्शन: एक समस्यात्मक अध्ययन, ब्रह्म स्वरूप अग्रवाल, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1978
3. पाश्चात्य दर्शन, चन्द्रधर शर्मा, एम.एल.बी.डी. पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1992
4. पाश्चात्य दर्शन का उद्भव एवं विकास, हरिशंकर उपाध्याय, अनुशीलन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. पाश्चात्य दर्शन का इतिहास - भाग एक एवं दो, सम्पा. दयाकृष्ण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2014
2. काण्ट का दर्शन, सभाजीत मिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2024
3. काण्ट के दर्शन का तात्पर्य, सम्पा. अम्बिकादत्त शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2019
4. पाश्चात्य दर्शन की दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, जे.एस. श्रीवास्तव, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2017

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSM-122	Traditional Western Philosophy	5	1	0	6	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are required to learn the metaphysics and epistemology of the Western philosophy of Greek and middle era, and modern theories of rationalism, empiricism and criticism.
- 2. Course Learning Outcomes:** By undergoing this course, the students will gain an understanding of the prominent metaphysical and epistemological ideas of traditional Western philosophy.

After successfully completing this course, the students:

- Will gain knowledge of the main features of Greek philosophy along with Socrates' and Plato's epistemology, Socrates' ethics and Aristotle's metaphysics.
- Would be able to know the thoughts of prominent medieval philosophers about God and the world.
- Will know the main thrust of rationalism along with the theories of metaphysics of rationalist philosophers and the theories related to mind-body problem.
- Will understand the epistemological and metaphysical issues of empiricism.
- Will understand Kant's critical philosophy.

Course Content

Unit I: Greek Philosophy: Introduction and Main Features, Socrates' Epistemology and Ethics, Plato's Epistemology and Theory of Ideas, Aristotle's Theory of Matter and Form.

(18 lectures/hours)

Unit II: Medieval Philosophy: Introduction and Major Features, the Ideas of Augustine, Anselm, and Aquinas related to the World and God

(18 lectures/hours)

Unit III: Rationalism: Emergence and Significant Features of Modern Philosophy, Descartes - Philosophical Method, Cogito Ergo Sum; Spinoza - Theory of Substance, Pantheism; Leibniz - Monadology, Identity of Indiscernibles; Theories of Mind-Body Relationship- Interactionism, Parallelism and the Principle of Pre-established Harmony (18 lectures/hours)

Unit IV: Empiricism: Introduction and Common Features, Locke - Epistemology, Refutation of Innate Ideas, Berkeley - Esse-Est-Percipi, Subjective Idealism, Hume - Epistemology, Scepticism

(18 lectures/hours)

Unit V: Critical Philosophy: Background, Kant's Synthesis of Rationalism and Empiricism, Synthetic A Priori Judgements, Categories of Understanding, the Concept of Space and Time

(18 lectures/hours)

Essential Readings:

1. The History of Western Philosophy, B. Russell, Routledge, London, 2020
2. A Short History of Modern Philosophy: From Descartes to Wittgenstein, Roger Scruton, Routledge, London, 2002
3. A Brief History of Western Philosophy, Anthony Kenny, Wiley-Blackwell, 1998
4. A History of Philosophy, Frank Thilly, EBH Publisher, 2021
5. The Great Philosophers: The Western World, E.W.F. Tomlin, Skeffington and Sons Ltd, New York, 1859

Suggested Readings:

1. A New History of Western Philosophy (3 vols.) Anthony Kenny, Clarendon Press, Oxford, 2006
2. History of Philosophy (11 vols.), Frederick Copleston, Continuum, UK, 2003
3. Free ebooks available through the Project Gutenberg at <https://www.gutenberg.org/>
4. Philosophy Articles from ePG Pathshala available at <https://epgp.inflibnet.ac.in>

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSE-121	नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय और पाश्चात्य नीतिशास्त्र की मौलिक अवधारणाओं और सिद्धांतों का बोध कराना है।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी भारतीय और पाश्चात्य ज्ञान परंपरा में निहित नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों से अवगत हो जाएगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी :

- नीतिशास्त्र के स्वरूप, क्षेत्र तथा विधियों को समझ सकेंगे।
- भारतीय एवं पाश्चात्य नैतिक परम्पराओं की प्रमुख अवधारणाओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
- कर्तव्यपरक, परिणामपरक तथा सद्गुणपरक नैतिक सिद्धान्तों की तुलना कर सकेंगे।
- धर्म, कर्म, पुरुषार्थ, निरपेक्ष आदेश तथा आत्मपूर्णतावाद जैसी अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- तुलनात्मक दार्शनिक दृष्टि से नैतिक समस्याओं का मूल्यांकन कर सकेंगे।

विषय वस्तु

इकाई 1: नीतिशास्त्र का स्वरूप, क्षेत्र एवं विधियाँ

नीतिशास्त्र का स्वरूप एवं विषय-क्षेत्र

नीतिशास्त्र का समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, धर्म और दर्शनशास्त्र से सम्बन्ध

तथ्यपरक निर्णय और मूल्यपरक निर्णय में भेद

नैतिक अवधारणाएँ: शुभ, उचित, कर्तव्य, सद्गुण

संकल्प-स्वातंत्र्य एवं नैतिक उत्तरदायित्व

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: पाश्चात्य नीतिशास्त्र के सिद्धान्त

सद्गुण नीतिशास्त्र: सुक्रात-ज्ञान के रूप में सद्गुण, प्लेटो-प्रधान सद्गुण एवं आदर्श नैतिक जीवन, अरस्तू-मध्यममार्ग का सिद्धान्त, यूडाइमोनिया, कर्तव्यपरक नीतिशास्त्र: नैतिकता की पूर्वमान्यताएँ, शुभ-संकल्प, कर्तव्य के लिए कर्तव्य, निरपेक्ष आदेश, साध्यों का राज्य उपयोगितावाद (बेंथम, मिल, सिजविक)

विकासवादी सुखवाद (हर्बर्ट स्पेन्सर)

आत्मपूर्णतावाद (एफ. एच. ब्रेडले) एवं अंतःप्रज्ञावाद (बिशप जोसेफ बटलर)

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: भारतीय नैतिक चिंतन

भारतीय नैतिक चिंतन के स्रोत एवं विशेषताएँ

धर्म की अवधारणा: मीमांसा, वैशेषिक, बौद्ध

ऋत, ऋण, एवं यज्ञ

कर्म-सिद्धान्त, पुनर्जन्म एवं नैतिक उत्तरदायित्व की अवधारणा

पुरुषार्थ एवं वर्णाश्रम व्यवस्था

चार्वाक सुखवाद

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: विशिष्ट भारतीय नीतिशास्त्र

योग दर्शन की नीतिशास्त्रीय अवधारणाएँ - यम और नियम

भगवद्गीता की नीतिशास्त्रीय अवधारणाएँ - निष्काम कर्मयोग, लोकसंग्रह, स्वधर्म

बौद्ध नीतिशास्त्रीय अवधारणाएँ - आष्टांगिक मार्ग, षड्पारमिताएँ, ब्रह्मविहार, पंचशील

जैन नीतिशास्त्रीय अवधारणाएँ - त्रिरत्न, महाव्रत, अणुव्रत

महामति प्राणनाथ का नीतिदर्शन: चार निषेध, पाँच कर्तव्य, सप्त साधन

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: तुलनात्मक नीतिशास्त्र

धर्म और सद्गुण

मोक्ष और यूडाइमोनिया

निष्काम कर्म और निरपेक्ष आदेश

अभ्युदय और उपयोगिता

कर्म-सिद्धान्त और अशुभ की समस्या

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. नीतिशास्त्र, नित्यानन्द मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2005
2. नीतिशास्त्र की रूपरेखा: पाश्चात्य और भारतीय, अशोक कुमार वर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2017
3. नीतिशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, हृदय नारायण मिश्र, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002
4. भारतीय नीतिशास्त्र, जय प्रकाश शाक्य, अशोक प्रकाशन, आगरा, 2011
5. नीतिशास्त्र की रूपरेखा, रत्ना देव, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1995

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. उपनिषदों का नीतिदर्शन, संतोष आचार्य, प्राकृत भर्ती अकादमी, जयपुर, 2014
2. भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास, भीखनलाल आत्रेय, हिन्दी समिति, लखनऊ, 1964
3. भारतीय नीतिशास्त्र, दिवाकर पाठक, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1994
4. उपनिषद दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण, रामचन्द्र दत्तात्रेय रानाडे, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1971
5. नीतिशास्त्र की भूमिका, हृदय नारायण मिश्र, जमुना प्रसाद अवस्थी, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1983
6. नीति विज्ञान के मूल सिद्धान्त, लक्ष्मी सक्सेना, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2006
7. जैन, बौद्ध और गीता के आचारदर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन, सागरमल जैन, राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर, 1982

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSE-121	Ethics (Indian and Western)	3	1	0	4	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 Lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** The objective of this course is to make the students understand the fundamental concepts and principles of Indian and Western ethics.
- 2. Course Learning Outcomes:** After undergoing this course, the students will come to know the moral values and principles inherent in Indian and Western knowledge traditions.

After successfully completing this course, the students would be able to:

- Understand the nature, scope, and perspective of moral philosophy (ethics)
- Analyze the key principles of Indian and Western ethical traditions
- Compare deontological, consequentialist, and virtue-based ethical theories
- Understand ideals such as Dharma, Karma, Puruṣārtha, the Categorical Imperative, and Perfectionism and Intuitionism
- Evaluate ethical concepts from a comparative philosophical standpoint

Course Content

Unit I: Nature, Scope, and Methods of Ethics

Nature and Scope of Ethics

Relationship of Ethics with Sociology, Psychology, Political Science, Religion, and Philosophy

Distinction between Factual Judgments and Value Judgments

Moral Concepts: Good, Right, Duty, and Virtue

Freedom of Will and Moral Responsibility (12 lectures/hours)

Unit II: Theories of Western Ethics

Virtue Ethics: Socrates—Virtue as knowledge, Plato—Cardinal Virtues and Ideal Moral Life
Aristotle—Doctrine of the Golden Mean, Eudaimonia

Deontological Ethics: Postulates of Morality, Good Will, Duty for Duty Sake, Categorical Imperative, Kingdom of Ends

Utilitarianism (Bentham, Mill, Sidgwick)

Evolutionary Hedonism (Herbert Spencer)

Perfectionism (F. H. Bradley) and Intuitionism (Bishop Joseph Butler) (12 lectures/hours)

Unit III: Indian Ethical Thought

Sources and Characteristics of Indian Ethical Thought

The Concept of Dharma: Mīmāṃsā, Vaiśeṣika, and Buddhism

Ṛta, Ṛṇa, and Yajña

The Doctrine of Karma, Rebirth, and the Concept of Moral Responsibility

Puruṣārtha and Varṇāśrama System

Cārvāka Hedonism (12 lectures/hours)

Unit IV: Specific Indian Ethics

Ethical Concepts of Yoga Philosophy – Yama and Niyama

Ethical Concepts of Bhagavad Gīta – Niṣkāma Karmayoga, Loksaṁgraha, Swadharma

Buddhist Ethical Concepts – Eightfold Path, Six Paramitas, Brahmavihāra, Pañcaśīla

Jaina Ethical Concepts – Triratna, Mahāvratā, Aṇuvratā

Philosophy of Mahāmati Prāṇanātha: Four Prohibitions (niṣedha), Five Duties (kartavya), Seven Means (sādhana) (12 lectures/hours)

Unit V: Comparative Ethics

Dharma and Virtue

Mokṣa and Eudaimonia

Niṣkāma Karma and the Categorical Imperative

Abhyudaya and Utility

The Doctrine of Karma and the Problem of Evil (12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. An Introduction to Ethics, William Lillie, Methuen, London, 1957
2. A Short History of Ethics: A History of Moral Philosophy from Homeric Age to Twentieth Century, Alasdair McIntyre, Routledge, London, 1998
3. A Manual of Hindu Ethics, B. D. Chandavarkar, Oriental Book Agency, Poona, 1965
4. The Nature of Buddhist Ethics, Damien Keown, Palgrave Macmillan, Basingstoke, UK, 2014
5. The Dimensions of Karma, S. S. Rama Rao Pappu (ed.), Chanakya Publications, Delhi, 1987
6. The Ethics of the Hindus, S.K. Maitra, University of Calcutta, Calcutta, 1963
7. A Manual of Ethics, Jadunath Sinha, The Central Book Agency, Calcutta, 1947
8. Classical Indian Ethical Thought, Kedar Nath Tiwari, Motilal Banarasidass, Delhi, 1998

Suggested Readings:

1. Nichomachean Ethics, Aristotle, Harvard University Press, New York, 1926
2. The Nature of Morality: An Introduction to Ethics, G. Harman, Oxford University Press, USA, 1977
3. The Difficulty of Being Good: On the Subtle Art of Dharma, Gurucharan Das, OUP, New York, 2010
4. Indian Ethics: Classical traditions and contemporary challenges vol. 1, Purushottama Bilimoria, Joseph Prabhu, Renuka M. Sharma (eds.), Ashgate Publishing, Ltd., Hampshire, 2007
5. Karma, Causation and Retributive Morality, R. Prasad, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, 1989
6. Varṇadharma, Niṣkāma Karma, and Practical Morality: Critical Essays on Applied Ethics, R. Prasad, DK Printworld Ltd., New Delhi, 1999.
7. Ethics and the History of Indian Philosophy, Shyam Ranganathana, Motilal Banarsidass, Delhi, 2007

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-GE-121	दर्शनशास्त्र में शोध प्रविधि	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

1. **पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को दर्शनशास्त्र के अध्ययन एवं अभ्यास के विभिन्न तरीकों और प्रक्रियाओं को सिखाना है।
2. **अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, विद्यार्थी दर्शन संबंधी लेखन के स्वरूप, तरीकों और उसके करने की प्रक्रिया से परिचित हो जाएंगे।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, विद्यार्थी के निम्नलिखित बातों में पारंगत होने की अपेक्षा है:

- (i) शोध का अर्थ समझना
- (ii) दर्शनशास्त्र के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोणों को सीखना और समझना
- (iii) विषय-वस्तु की व्याख्या की समझ विकसित करना
- (iv) दार्शनिक ग्रंथों और लेखों को पढ़ने और उनकी समीक्षा करने के तरीके सीखना
- (v) उद्धरण और संदर्भ देने की विधि एवं शोध नैतिकता से परिचित होना

विषय वस्तु

इकाई 1:

1. शोध: अर्थ एवं परिभाषा
2. दार्शनिक शोध: अर्थ एवं प्रविधियाँ (12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2:

3. गुणात्मक और परिमाणात्मक शोध
4. विषय-वस्तु की व्याख्या की विधियाँ (12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3:

5. दार्शनिक युक्ति को समझना
6. दार्शनिक साहित्य को पढ़ने की विधि (12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4:

7. किसी पुस्तक या शोधपत्र की समीक्षा विधि
8. दार्शनिक शोध-पत्र को लिखने की विधि (12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5:

9. टिप्पणी, संदर्भसूची और ग्रंथ-सूची में अंतर
10. संदर्भ देने की विधियाँ
11. शोध संबंधी नैतिक समस्याएँ (12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. अनुसंधान-प्रविधि: सिद्धान्त और प्रक्रिया, एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
2. शोध पद्धति, सी. आर. कोठारी, न्यू एज इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2003
3. शोध एवं प्रकाशन नीतिशास्त्र, सुरेन्द्र कटारिया, श्रीराम पाण्डेय, आर. बी. एस. ए. पब्लिशर, जयपुर, 2025
4. रिसर्च मेथडॉलोजी, लक्ष्मी नारायण कोली, वाई के पब्लिशर्स, आगरा, 2010

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-GE-121	Research Methodology in Philosophy	3	1	0	4	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 Lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are supposed to learn various methods and practices of doing philosophy.
- 2. Course Learning Outcomes:** After undergoing this course, the student will be familiar with the nature and methods along with the process of documentation of philosophical writing.

After successful completion of this course, the students shall be able to

- Understand the meaning of research
- Learn and appreciate various approaches of doing philosophy
- Develop the understanding of content interpretation
- Learn methods of reading and reviewing philosophical texts and articles
- Know the methods of citations and referencing along with research ethics

Course Content

Unit I

1. Research: meaning and definition
2. Philosophical Research: meaning and methods (12 lectures/hours)

Unit II

3. Qualitative and Quantitative Research
4. Different methods of content interpretation (12 lectures/hours)

Unit III

5. Understanding Philosophical Argument
6. Method of reading a philosophical text (12 lectures/hours)

Unit IV

7. Method of reviewing a book/article
8. Method of writing a philosophical article (12 lectures/hours)

Unit V

9. Difference between Note, Reference, and Bibliography
10. Different methods of Referencing
11. Moral issues related to research (12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. The Philosopher's Tool Kit: A Compendium of Philosophical Concepts and Methods Julian Baggini and Peter S. Wiley Blackwell, Oxford, 2010
2. Philosophical Style: An Anthology about the Writing and Reading of Philosophy, Berel Lang (ed.), Nelson-Hall, Chicago, 1980
3. The Ways of Knowing or the Methods of Philosophy, W.M.P. Montague, George Allen & Unwin Ltd, London, 1925
4. Studies in Philosophical Methods, Chhaya Rai, Jabalpur University, Jabalpur, 1980

सेमेस्टर II

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-DSM-221	समकालीन भारतीय दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को सकालीन भारतीय दर्शन की पृष्ठभूमि व सामान्य विशेषताओं के साथ चुने हुए समकालीन दार्शनिकों की मुख्य दार्शनिक अवधारणाओं से परिचित कराना है।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी में समकालीन भारतीय दर्शन की प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं का बोध होगा। विद्यार्थी में समकालीन दार्शनिकों के चिन्तन के प्रति समझ विकसित हो जायेगी।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- समकालीन दर्शन की पृष्ठभूमि एवं सामान्य विशेषताओं से परिचित हो जायेगा।
- स्वामी विवेकानन्द के व्यावहारिक वेदान्त, सार्वभौम धर्म एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर के मानववाद से परिचित हो जायेगा।
- महात्मा गाँधी के स्वराज एवं सर्वोदय विचार व श्री अरविन्द के विकासवाद व योग समन्वय से परिचित हो जायेगा।
- को.के.सी. भट्टाचार्य एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों का बोध हो जायेगा।
- मानववाद के विभिन्न रूपों, सर्जनात्मकता एवं स्वतंत्र मानवीय सर्जना की तत्त्वमीमांसा से परिचित होगा।

विषय वस्तु

इकाई 1:

समकालीन भारतीय दर्शन की मुख्य प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ

स्वामी विवेकानन्द - व्यावहारिक वेदान्त, सार्वभौम धर्म की अवधारणा

श्रीअरविन्द - विकासवाद, योग समन्वय

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2:

महात्मा गाँधी – सत्य एवं अहिंसा, सर्वोदय, आधुनिक सभ्यता की समालोचना

रवीन्द्रनाथ टैगोर – मानव धर्म, राष्ट्रवाद और शिक्षा पर विचार

बी. आर. अंबेडकर – जाति-प्रथा का उन्मूलन, नव-बौद्धयान, संवैधानिक नैतिकता

नारायण गुरु – जाति-प्रथा की आलोचना, सामाजिक समता

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3:

के.सी. भट्टाचार्य - विचारों में स्वराज, दर्शन की अवधारणा, स्वतंत्रता-रूप विषय

सर्वपल्ली राधाकृष्णन – बुद्धि और अंतर्ज्ञान, जीवन का आदर्शवादी दृष्टिकोण

मोहम्मद इक़बाल - बुद्धि और अंतर्ज्ञान, आत्म और ईश्वर

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4:

जे. कृष्णमूर्ति – ज्ञात से मुक्ति, चयनरहित जागरूकता, शिक्षा पर विचार

चंद्र मोहन जैन (ओशो रजनीश) – ज़ोरबा द बुद्धा, धर्म-मुक्त आध्यात्मिकता

एम.एन. रॉय – उत्कट मानवतावाद

दीनदयाल उपाध्याय – एकात्म मानववाद

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5:

एन.के. देवराज – सर्जनात्मक मानवतावाद

दयाकृष्ण – सर्जनात्मकता और स्वतंत्रता की अवधारणा

यशदेव शल्य - मानव सृजन की तत्वमीमांसा, दर्शन की अवधारणा

अग्रहार नागराज – शरीर और जीवन के सह-अस्तित्व रूप में मानव

(18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. समकालीन भारतीय दर्शन, बी.के. लाल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2014
2. समकालीन भारतीय दर्शन, लक्ष्मी सकसेना, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2017
3. समकालीन भारतीय दर्शन, वी. एस. नरवडे, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, 1964
4. भारतीय दर्शन, सम्पादक एन.के. देवराज, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2002
5. यशदेव शल्य समग्र, सम्पा. अम्बिकादत्त शर्मा, डी.के. पिन्टवर्ल्ड, नई दिल्ली, 2016
6. ओशो साहित्य <https://www.osho.com/hi/osho-hindi-online-library/the-books>
7. ऑनलाइन पुस्तकें <https://www.madhyasth.org/>

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. ग्राम स्वराज्य, एम.के. गाँधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, 2015
2. गाँधी दर्शन मीमांसा, रामजी सिंह, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, बिहार
3. भारतीय दर्शन के 50 वर्ष, सम्पा. अम्बिकादत्त शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर, 2006
4. यशदेव शल्य समग्र, सम्पा. अम्बिकादत्त शर्मा, डी.के. पिन्टवर्ल्ड, नई दिल्ली, 2016
5. एकात्म मानववाद, दीनदयाल उपाध्याय, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017

Semester-II

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-DSM-221	Contemporary Indian Philosophy	5	1	0	6	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are to be introduced to the main philosophical concepts of selected contemporary philosophers along with the background and general characteristics of contemporary Indian philosophy.
- 2. Course Learning Outcomes:** After successful completion of this course, the student will understand the trends and characteristics of contemporary Indian philosophy. The student will develop an understanding of the thinking of contemporary philosophers.

After successfully completing this course, the students

- Will know the background and general characteristics of contemporary Indian philosophy.
- Will become familiar with Practical Vedanta, Universal Religion and Integral Yoga.
- Will understand Mahatma Gandhi's Swaraj and Sarvodaya ideas and Rabindranath Tagore's ideas on nationalism and education.
- Will understand the main philosophical principles of Bhattacharya and Sarvepalli Radhakrishnan.
- Will be familiar with various forms of humanism, creativity and the metaphysics of independent human creativity.

Course Content

Unit I

Trends and Features of Contemporary Indian Philosophy

Swami Vivekananda—Practical Vedanta, Concept of Universal Religion

Sri Aurobindo – Theory of Evolution, Integral Yoga (18 lectures/hours)

Unit II

Mahatma Gandhi – Truth and Non-violence, Sarvodaya, Critique of Modern Civilization

Rabindranath Tagore – Religion of Man, Ideas on Nationalism and Education

B. R. Ambedkar – Annihilation of Caste, Neo-Buddhism, and Constitutional Morality

Narayana Guru – Critique of Caste, Social Equality (18 lectures/hours)

Unit III

K.C. Bhattacharya - Swaraj in Ideas, Concept of Philosophy, Subject as Freedom

Sarvepalli Radhakrishnan – Intellect and Intuition, Idealist View of Life

Mohammad Iqbal - Intellect and Intuition, Self and God (18 lectures/hours)

Unit IV

J. Krishnamurti – Freedom from the Known, Choiceless Awareness, Ideas on Education

Chandra Mohan Jain (Osho Rajneesh) – Zorba the Buddha, Religionless Spirituality

M.N. Roy – Radical Humanism

Deendayal Upadhyaya – Integral Humanism (18 lectures/hours)

Unit V

N.K. Devraj - Creative Humanism

Dayakrishna - Concept of Creativity and Freedom

Yashdev Shalya – Metaphysics of Human Creation, Concept of Philosophy

Agrahar Nagaraj –Human as the Co-existence of Body and Self (18 lectures/hours)

Essential Readings:

1. Contemporary Indian Philosophy, Basant Kumal Lal, MLBD, 2017
2. Contemporary Indian Philosophy, S. Radhakrishnan and J.H. Muirhead, George Allen and Unwin, London, 1952
3. Indian Philosophers of the Recent Past, Sanjay Kumar Shukla, DK Printworld, New Delhi, 2022
4. Selections from Osho Literature from <https://www.osho.com/>
5. Books from <https://www.madhyasth.org/>
6. Study material supplied by teacher

Suggested Readings:

1. The Svaraj, Navajivan Prakashan Mandir, Ahamedabad, 2004
2. The Philosophy of Daya Krishna, Edited by Bhuvan Chandel, K.L. Sharma, ICPR, New Delhi, 1996
3. Books from <https://www.madhyasth.org/>

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-DSM-222	समकालीन पाश्चात्य दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रमुख समकालीन पाश्चात्य दार्शनिकों के मौलिक सिद्धान्तों से परिचय कराना है।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक अध्ययन से विद्यार्थियों में समकालीन पाश्चात्य दार्शनिकों के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्त व अवधारणाओं की समझ विकसित होगी।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- को समकालीन पाश्चात्य दर्शन की सामान्य प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं के साथ निरपेक्ष प्रत्ययवाद एवं अर्थक्रियावादी सिद्धान्त का बोध हो जायेगा।
- जी.ई.मूर एवं बर्ट्रेण्ड रसेल के प्रमुख दार्शनिक मतों से परिचित हो जायेगा।
- लुडविग विट्गेन्स्टाइन एवं ए.जे.एयर के दार्शनिक सिद्धान्तों से परिचित हो जायेगा।
- कोटि-भ्रम सिद्धान्त, वाक् क्रिया के सिद्धान्त, व्यक्ति के सिद्धान्त से परिचित हो जायेगा।
- हुस्सरल, ज्यॉ पॉल सार्त्र और मार्ले पोंटी के प्रमुख दार्शनिक विचारों से परिचित हो जायेगा।

विषय वस्तु

इकाई 1:

समकालीन पाश्चात्य दर्शन की पृष्ठभूमि, प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ
 एफ.एच. ब्रैडले - आभास एवं सत् की समस्या, निरपेक्ष प्रत्ययवाद
 विलियम जेम्स - सत्य का अर्थक्रियावादी सिद्धान्त, उत्कट अनुभववाद

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2:

जी.ई. मूर - सामान्य ज्ञान का सिद्धान्त, प्रत्ययवाद का खण्डन, इन्द्रिय प्रदत्त का सिद्धान्त
 बर्ट्रेण्ड रसेल - तार्किक अणुवाद, विवरण का सिद्धान्त

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3:

लुडविग विट्गेन्स्टाइन - अर्थ का चित्र-सिद्धान्त, भाषायी-खेल का सिद्धान्त
 ए.जे. एयर - सत्यापन का सिद्धान्त, तत्त्वमीमांसा का प्रत्याख्यान

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4:

गिलबर्ट राइल - कोटि-भ्रम का सिद्धान्त
 जे.एल. ऑस्टिन - वाक् क्रिया का सिद्धान्त
 पी.एफ. स्ट्रासन - व्यक्ति का सिद्धान्त

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5:

एडमण्ड हुस्सर्ल – संवृत्तिशास्त्रीय विधि, चेतना की विषयापेक्षा

ज्यॉ पॉल सार्त्र - अस्तित्व सार का पूर्वगामी है, स्वतन्त्रता की अवधारणा, दुरास्था

मार्ले पोंटी – प्रत्यक्ष, सदेहिक चेतना

(18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. समकालीन पाश्चात्य दर्शन, लक्ष्मी सक्सेना एवं सभाजीत मिश्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2009
2. समकालीन पाश्चात्य दर्शन, बी.के. लाल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 1990
3. अर्वाचीन दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास, जे.एस. श्रीवास्तव, किताब महल एजेन्सी, इलाहाबाद, 1983
4. अस्तित्ववाद के प्रमुख विचारक, लक्ष्मी सक्सेना एवं सभाजीत मिश्र, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2002
5. पाश्चात्य दर्शन की समकालीन प्रवृत्तियाँ, सुरेन्द्र वर्मा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2000

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, भाग एक एवं दो, सम्पा. दयाकृष्ण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1979
2. शंकराचार्य एवं सार्त्र के दर्शन में मानव नियति, आनन्द मिश्र, भारती विद्याभवन, वाराणसी, 2000
3. समकालीन पाश्चात्य दर्शन, नित्यानन्द मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2007

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-DSM-222	Contemporary Western Philosophy	5	1	0	6	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, students are to be introduced to the fundamental principles of major contemporary Western philosophers.
- 2. Course Learning Outcomes:** In this course, the students are supposed to develop an understanding of the major philosophical theories and concepts of contemporary Western philosophers.

After successful completion of this course, the students

- Will be able to understand the general trends and characteristics of contemporary western philosophy along with absolute idealism and functionalist theory.
- Will become familiar with the main philosophical views of G.E. Moore and Bertrand Russell.
- Will understand the philosophical theories of Ludwig Wittgenstein and A.J. Ayre.
- Will know the theory of category mistake, the theory of editability of language, the theory of individual.
- Will be able to appreciate the core philosophical ideas of Husserl, Jean-Paul Sartre and Merleau-Ponty.

Course Content

Unit I:

Background, Trends and Characteristics of Contemporary Western Philosophy

F.H. Bradley - Problem of Appearance and Reality, Absolute Idealism

William James - Pragmatic Theory of Truth, Radical Empiricism (18 lectures/hours)

Unit II:

G.E. Moore - Theory of Common Sense, Refutation of Idealism, Theory of Sense-data

Bertrand Russell - Logical Atomism, Theory of Description (18 lectures/hours)

Unit III:

Ludwig Wittgenstein – Picture Theory of Meaning, Language Game Theory

A.J. Ayre – Theory of Verification, Rejection of Metaphysics (18 lectures/hours)

Unit IV:

Gilbert Ryle – Theory of Category Mistake

J. L. Austin – Theory of Speech-Act

P. F. Strawson – Theory of Person (18 lectures/hours)

Unit V:

Edmund Husserl – Phenomenological Method, Intentionality of Consciousness

Jean-Paul Sartre – Existence precedes Essence, the Concept of Freedom

Merleau-Ponty – Perception, Embodied Consciousness (18 lectures/hours)

Essential Readings:

1. The Chief Currents of Contemporary Philosophy, Dharendra Mohan Datta, The University of Calcutta, 1970
2. Recent Development in Analytical Philosophy, R.C. Pradhan, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, 2001
3. Contemporary Philosophy and its Origins, Sheldon P. Peterfreund, and Theodore C. Denise, East-West Press PVT. LTD. New Delhi, 1967

Suggested Readings:

1. Appearance and Reality, F.H. Bradley, Oxford Univ. Press, London, 1959
2. The Concept of Mind, Gilbert Ryle, Hutchinson's University Library London, 1955
3. Philosophy in the Twentieth Century, A.J. Ayer, Counter Points Publisher, 1982
4. Speech Act and Linguistic Communications, Rishikant Pandey, Concept Publishing Company, New Delhi, 2008

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-DSE-221	सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को समाज व राजनीति के दार्शनिक पक्ष का ज्ञान कराना है।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को समाज व राजनीति के दार्शनिक पक्ष का ज्ञान हो जायेगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी :

- सामाजिक-राजनीतिक दर्शन के स्वरूप, उसकी विभिन्न समस्याओं, अवधारणाओं एवं व्यक्ति और राज्य के मध्य सम्बन्धों से परिचित हो जायेगा।
- व्यक्ति से सम्बन्धित मूल अवधारणाओं जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय एवं अधिकार आदि की गम्भीरता से परिचित हो जायेगा।
- राज्य के संचालन की विभिन्न विचारधाराओं जैसे लोकतन्त्र, समाजवाद, संविधानवाद आदि से परिचित हो जायेगा।
- को व्यक्ति एवं राज्य से सम्बन्धित समस्यामूलक अवधारणाओं का ज्ञान हो जायेगा।
- भारतीय विचारकों की वैश्विक अवधारणाओं को समझ सकेगा और उसे अपनी कर्तव्यनिष्ठा का बोध होगा।

विषय वस्तु

इकाई 1: सामाजिक-राजनीतिक दर्शन का स्वरूप, विषय-क्षेत्र और समस्याएँ
व्यक्ति और समाज के बीच सम्बन्ध विषयक विभिन्न अवधारणाएँ
राज्य के कार्य-विषयक सावयवी और यांत्रिक सिद्धान्त

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: सामाजिक-राजनीतिक आदर्श - स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, बन्धुत्व

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: सामाजिक-राजनीतिक विचारधाराएँ - लोकतंत्र, सर्वाधिकारवाद, समाजवाद, साम्यवाद, संविधानवाद, उदारवाद

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: समकालीन सामाजिक-राजनीतिक विचारधाराएँ - उत्तर-आधुनिकतावाद, बहुसंस्कृतिवाद, नारीवाद, पर्यावरणवाद, मानवाधिकार

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: सामाजिक-राजनीतिक भारतीय विचारक :

कौटिल्य – संप्रभुता, राज्य के सात अंग

महात्मा गाँधी – न्यासिता का सिद्धान्त

जवाहरलाल नेहरू – अन्तर्राष्ट्रवाद (गुटनिरपेक्षता एवं पंचशील)

अमर्त्य सेन – सक्षमता दृष्टिकोण

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. समाजदर्शन : सैद्धान्तिक एवं समस्यात्मक विवेचन, हृदय नारायण मिश्र, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2009
2. सामाजिक-राजनीतिक दर्शन की रूपरेखा, राममूर्ति पाठक, अभिमन्यु प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004
3. समाज और राजनीति दर्शन, रमेन्द्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2005
4. प्रारम्भिक समाज एवं राजनीति दर्शन, अशोक कुमार वर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, 1999
5. सामाजिक राजनीतिक दर्शन के नये आयाम, हृदय नारायण मिश्र, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001
6. समाज दर्शन, शिव भानु सिंह, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद
7. आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक विचारक, वी.पी. वर्मा, राधाकृष्ण पब्लिकेशन, मेरठ
8. अर्थशास्त्र, कौटिल्य, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 1984
9. सेन का सक्षमता दृष्टिकोण, <https://iep.utm.edu/sen-cap/>

प्रस्तावित पुस्तकें:

- 1- गाँधी और उत्तर-गाँधी सर्वोदयी-विमर्श, आभा नवनी, मध्य भारती, अंक-73, डॉ0 हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रकाशन, जुलाई-दिसम्बर, 2017
- 2- हन्ना आरेंट : हिंसा का उत्खनन, अम्बिकादत्त शर्मा एवं विश्वनाथ मिश्र, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर, 2021
- 3- भारतीय राष्ट्रवाद, विश्वनाथ मिश्र, डी.के. प्रिन्टवर्ल्ड, नई दिल्ली, 2022

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
L6	I	PHL-DSE-221	Social and Political Philosophy	3	1	0	4	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are to be given knowledge about the philosophical aspect of society and politics.
- 2. Course Learning Outcomes:** Through this course, the students will gain knowledge about the philosophical aspect of society and politics.

After successfully completing this course, the students

- Will become familiar with the nature of socio-political philosophy, its various problems, concepts and the relationship between individual and State.
- Will know the seriousness of the basic concepts related to individual such as freedom, equality, justice and rights.
- Will understand various ideologies for the functions of State like democracy, socialism, constitutionalism etc.
- Will be able to analyze the concepts related to individual and State.
- Will understand the global concepts of Indian thinkers and will be aware of their duty.

Course Content

Unit I:

Nature, Subject matter and Problems of Socio-Political Philosophy

Various concepts of the relationship between Individual and Society

Organic and Mechanical Theories related to the Functioning of the State. (12 lectures/hours)

Unit II:

Socio-Political Ideals – Liberty, Equality, Justice, Rights, Fraternity (12 lectures/hours)

Unit III:

Socio-Political Ideologies – Democracy, Totalitarianism, Socialism, Communism,

Constitutionalism, Liberalism (12 lectures/hours)

Unit IV:

Contemporary Socio-Political Ideologies – Postmodernism, Multiculturalism, Feminism,

Environmentalism, Human Rights (12 lectures/hours)

Unit V: Socio-Political Indian Thinkers:

Kautilya – Sovereignty, Seven Organs of the State

Mahatma Gandhi – Theory of Trusteeship

Jawaharlal Nehru – Internationalism (Non-Alignment, Pañcaśīla)

Amartya Sen – Capability Approach (12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. Social and Political Thought of Mahatma Gandhi, B. Charkravarti, Routledge Publisher, 2006
2. Principles of Social & Political Theory, Ernest Barker, Oxford University Press, Calcutta, 1978
3. Social Philosophy: Past and Future, Daya Krishna, Institute of Advanced Study, Shimla, 1969
4. Essays in Social and Political Philosophy, Edited by Krishna Roy & Chhanda Gupta, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, 1989
5. Social and Political Philosophy, O. P. Gauba, Mayur Paperback, Delhi, 2018
6. Arthaśāstra, Kautilya (trans. Shamasastri), G.K. Rama Rao Ltd, Mysore, 1929
7. Sen's Capability Approach, <https://iep.utm.edu/sen-cap/>

Suggested Readings:

1. Political Theory: An Introduction, R. Bhargava and A. Acharya (eds.), Pearson Education, Noida, 2008
2. Introduction to Political Theory, O. P. Gauba, Macmillan, Delhi, 2009
3. Justice: What's the Right Thing to Do?, M.J. Sandel Farrar, Straus and Giroux, New York, 2010
4. The Blackwell Guide to Social and Political Philosophy, R. L. Simon (ed.), Blackwell Publishers, Massachusetts, 2002
5. Commodities and Capabilities, Amartya Sen, OUP, Delhi, 1987

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
L6	II	PHL-GE-221	प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी को प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र की प्रविधियों से परिचय एवं अभ्यास कराया जायेगा।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के सिद्धान्तों एवं प्रयोगों से परिचित होगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- तर्कशास्त्र एवं युक्ति के स्वरूप के साथ-साथ वाक्य के प्रकार एवं प्रतीकीकरण के महत्व को समझेगा।
- सत्यताफलनात्मक कथनों के सत्यता मूल्यों को निगमित करने की प्रविधि सीखेगा।
- वाक्याकार एवं युक्त्याकार से परिचित होगा।
- निगमन के अनेक नियमों और उनके प्रयोगों से परिचित होगा।
- परिमाणक युक्तियों के प्रतीकीकरण और परीक्षण का ज्ञान प्राप्त करेगा।

विषय वस्तु

इकाई 1

तर्कशास्त्र क्या है?

युक्ति का स्वरूप: आधारवाक्य और निष्कर्ष

निगमनात्मक एवं आगमनात्मक युक्ति

सत्यता एवं वैधता, आगमनात्मक छलांग

सरल तथा मिश्र तर्कवाक्य, प्रतीकों का महत्व

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2

सत्यताफलनात्मक कथन एवं उनके मूल्य – निषेध, संयोजन, वियोजन

शाब्दिक प्रतिपत्ति एवं द्विआपादन

शाब्दिक प्रतिपत्ति के विरोधाभास

वाक्य एवं वाक्य-आकार - पुनर्कथन, व्याघात और संभाव्य

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3

युक्ति एवं युक्ति-आकार

युक्तियों की वैधता एवं अवैधता निर्धारण की सत्यता सारणी विधि

अनुमान के नियम एवं प्रतिस्थापन नियम

सत्यता फलन की परस्पर परिभाष्यता

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4

वैधता के आकारिक प्रमाण

अप्रत्यक्ष प्रमाण विधि एवं सोपाधिक प्रमाण विधि

अवैधता का निदर्शन

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5

एकल तर्कवाक्य एवं सामान्य तर्कवाक्य
 तर्कवाक्यों का बूलीय विश्लेषण एवं विरोध वर्ग
 निरपेक्ष तर्कवाक्यों का परिमाणक के साथ प्रतीकीकरण
 वैधता प्रमाणित करना
 अवैधता प्रमाणित करना

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. तर्कशास्त्र का परिचय, इरविंग एम. कोपी अनु. संगमलाल पाण्डेय, एशिया बुक कम्पनी इलाहाबाद, 2010
2. प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र प्रवेशिका, अशोक कुमार वर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2013
3. निगमनात्मक तर्कशास्त्र, केदारनाथ तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, 2016
4. तर्कशास्त्र, श्याम किशोर सेठ, नीलिमा मिश्रा, लोकभारती, इलाहाबाद, 2004
5. प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र, केदारनाथ तिवारी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. तर्कशास्त्र एवं वैज्ञानिक प्रणाली, मोरिस आर. एवं कोहन अर्नेष्ट नागेल, अनु. पूर्णचन्द्र जैन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2000

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6	II	PHL-GE-221	Symbolic Logic	3	1	0	4	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course the student will be introduced to the techniques of symbolic logic.
- 2. Course Learning Outcomes:** Through this course the student will become familiar with the principles and experiments of symbolic logic.

After successfully completing this course, the students

- Will understand the nature of logic and argumentation, as well as the types of propositions and the significance of symbolization.
- Will learn the technique of deriving truth values for truth-functional statements.
- Will become familiar with statement forms and argument forms.
- Will become acquainted with various rules of deduction and their applications.
- Will acquire knowledge regarding the symbolization and testing of arguments involving quantifiers.

Course Content

Unit I

What is Logic?

Nature of Argument: Premises and Conclusion

Deductive and Inductive Arguments

Truth and Validity, Inductive Leap

Simple and Compound Statements, Importance of Symbols (12 lectures/hours)

Unit II

Truth-functional Statements and their values – Negation, Conjunction, Disjunction

Material Implication and Bi-conditional Statement

Paradoxes of Material Implication

Statement and Statement Forms - Tautology, Contradiction and Contingent (12 lectures/hours)

Unit III

Arguments and Argument Forms

Truth-table Method for determining the Validity and Invalidity of Arguments

Rules of Inference and Rules of Replacement

Inter-definability of Truth-functions (12 lectures/hours)

Unit IV

Formal Proofs of Validity

The Method of Indirect Proof and the Method of Conditional Proof

Proving Invalidity (12 lectures/hours)

Unit V

Singular and General Propositions

Boolean Analysis of Categorical Propositions and the Square of Opposition

Symbolizing Categorical Propositions with Quantifiers

Proving Validity

Proving Invalidity (12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. An Introduction to Logic & Scientific Method, Cohen & Nagel. Routledge & Kegan Paul LTD, 1955
2. Introduction to Logic, Irvin M. Copi, Carl Cohen, Victor Rodych, Routledge, New York, 15th edition, 2019
3. A Textbook of Logic, Krishna Jain, DK. Printworld, 2012

Suggested Readings:

1. Logic, Chhanda Chakraborti, PHI, Learning Private Limited Delhi, 2016
2. Introduction to Logic, Irvin M. Copi, The Macmillan Company, New York, 1961

सेमेस्टर III

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSM-323	अनुप्रयुक्त दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

1. **पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी को अनुप्रयुक्त दर्शन के स्वरूप और उससे जुड़ी दार्शनिक समस्याओं से परिचय कराया जाएगा।
2. **अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, विद्यार्थी रोजमर्रा की जिंदगी में दार्शनिक चर्चा की अहमियत को समझ सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, विद्यार्थी निम्नलिखित बातों में सक्षम होंगे:

- (i) अनुप्रयुक्त या व्यावहारिक दर्शन के अंतर्गत आने वाले स्वरूप और नैतिक मुद्दों की पहचान करना
- (ii) यह समझना कि नैतिक विचार विभिन्न व्यवसायों से कैसे जुड़े हैं
- (iii) इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट और सोशल मीडिया से जुड़े नैतिक मुद्दों को समझना
- (iv) वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नैतिकता के महत्व को समझना
- (v) गैर-मानव-केंद्रित नैतिक दृष्टिकोण के महत्व को समझना

विषय वस्तु

इकाई 1

अनुप्रयुक्त दर्शन का अर्थ, स्वरूप और कार्यक्षेत्र
अनुप्रयुक्त दर्शन का उद्भव और विकास
अनुप्रयुक्त दर्शन और व्यावहारिक तर्कबुद्धि
आशय और कर्म

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2

तकनीक, समाज और मानवीय मूल्य
कृत्रिम बुद्धि और मानवीय रचनात्मकता
चिकित्सा नैतिकता: डॉक्टर-मरीज संबंध, गर्भपात, इच्छामृत्यु, कन्या भ्रूण हत्या
जेनेटिक इंजीनियरिंग

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3

व्यापारिक नीतिशास्त्र, औद्योगिक घरानों का सामाजिक दायित्व (CSR)
व्यावसायिक नीतिशास्त्र: व्यावसायिकता और व्यावसायिक दायित्व
विधिक नीतिशास्त्र: कानून और नैतिकता, विधिक दायित्व, कानून का अधिकार और वैधता

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4

मीडिया नीतिशास्त्र: निजता और निगरानी, सोशल मीडिया और नैतिक जिम्मेदारी
बौद्धिक संपदा अधिकार और परंपरागत ज्ञान
पर्यावरण नीतिशास्त्र: प्रकृति साधन है या साध्य, एल्डो लियोपोल्ड – भूमि नैतिकता, अर्ने नेस – गहन पारिस्थितिकी (18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5

वैश्विक नैतिकता: युद्ध और शांति, लैंगिक भेदभाव और लैंगिक न्याय

दार्शनिक परामर्श और मानसिक स्वास्थ्य

पीटर सिंगर - पशु अधिकार और पशु मुक्ति

(18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, एम. पी. चौरसिया, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2006
2. नीतिशास्त्र, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, जैव नीतिशास्त्र, मोनिका शिवहरे, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली, 2021
3. A Sand County Almanac: And Sketches Here and There, Aldo Leopold, Oxford University Press, Oxford, 1989
4. AI Ethics, Mark Coeckelbergh, The MIT Press, 2020
5. Applied Ethics, A. P. Dubey, NBC, Delhi, 2004
6. Applied Ethics, Peter Singer (ed.), Oxford University Press, Oxford, 1986
7. Applied Philosophy: Moral and Metaphysics in Contemporary Debate, Almond Brenda and Hill Donald (eds.), Routledge, New York, 1991.
8. Desperately Seeking Ethics: A Guide to Media Conduct, H. Good, Scarecrow Press, Inc. Lanham, 2003
9. Engineering, Business and Professional Ethics, Robinson, Simon (et al), Elsevier, Oxford, 2007
10. Environmental Ethics: Readings in Theory and Application (6th edition), L.P. Pojman and P. Pojman, Wadsworth, Boston, 2012
11. Ethical Issues in Journalism and the Media, R. Chadwick, Routledge, New York, 1994
12. Foundations of Environmental Ethics, Eugene C. Hargrove, Prentice Hall, New Jersey, 1989
13. Issues in Ethics and Applied Ethics Series (10 vols.), Avinash Kumar Srivastava, Shiva Nath Prasad (eds.), Concept Publishing House, Delhi, 2018 onwards
14. Practical Ethics, Peter Singer, Cambridge University Press, Cambridge, 2011
15. Principles of Bio-medical Ethics, J.F. Chidrese & T.L. Beauchamp, Oxford University Press, New York, 1989
16. R. Chadwick, 'Professional Ethics,' Routledge Encyclopaedia of Philosophy (ed. Edward Craig), Version 1.0, Routledge, London, 1998
17. The Rational Foundation of Ethics, T.L.S. Sprigge, Routledge, London, 1997
18. The Routledge Handbook of Mass Media Ethics, L. Wilkins and, C.G. Christians, Routledge, New York, 2020
19. A Companion to Applied Philosophy, Lippert-Rasmussen, K., Brownlee, K., & Coady, D. (Eds.). Wiley-Blackwell, West Sussex, 2016

Semester-III

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSM-323	Applied Philosophy	5	1	0	6	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students will be introduced to the nature and issues of applied philosophy.
- 2. Course Learning Outcomes:** After learning through this course, the students will know the relevance of philosophical discourse in day-to-day life.

After successfully completing this course, the students will be able to

- Identify the nature and moral issues under applied philosophy
- Recognize the way ethical ideas relate to various professions
- Understand the ethical issues involved in electronic, print and social media
- Appreciate how ethics matters in global perspective
- See the significance of non-anthropocentric ethical approach

Course Content

Unit I

Meaning, Nature and Scope of Applied Philosophy
 Emergence and Development of Applied Philosophy
 Applied Philosophy and Practical Reason
 Intention and Action

(18 lectures/hours)

Unit II

Technology, Society and Human Values
 Artificial Intelligence and Human Creativity
 Medical Ethics: Doctor-Patient Relationship, Abortion, Euthanasia, Female Infanticide
 Genetic Engineering

(18 lectures/hours)

Unit III

Business Ethics, Corporate Social Responsibility (CSR)
 Professional Ethics: Professionalism and Professional Responsibility
 Legal Ethics: Law and Morality, Legal Obligation, Authority and Validity of Law

(18 lectures/hours)

Unit IV

Media Ethics: Privacy and Surveillance, Social Media and Moral Responsibility
 Intellectual Property Rights and Traditional Knowledge
 Environmental Ethics: Nature as Means or End, Aldo Leopold- Land Ethic, Arne Naess- Deep Ecology

(18 lectures/hours)

Unit V

Global Ethics: War and Peace, Gender Discrimination and Gender Justice
 Philosophical Counselling and Mental Well-being
 Peter Singer- Animal Rights and Animal Liberation

(18 lectures/hours)

Essential Readings:

1. A Sand County Almanac: And Sketches Here and There, Aldo Leopold, Oxford University Press, Oxford, 1989
2. AI Ethics, Mark Coeckelbergh, The MIT Press, 2020
3. Applied Ethics, Peter Singer (ed.), Oxford University Press, Oxford, 1986
4. Applied Philosophy: Moral and Metaphysics in Contemporary Debate, Almond Brenda and Hill Donald (eds.), Routledge, New York, 1991.
5. Desperately Seeking Ethics: A Guide to Media Conduct, H. Good, Scarecrow Press, Inc. Lanham, 2003
6. Engineering, Business and Professional Ethics, Robinson, Simon (et al), Elsevier, Oxford, 2007
7. Environmental Ethics: Readings in Theory and Application (6th edition), L.P. Pojman and P. Pojman, Wadsworth, Boston, 2012
8. Ethical Issues in Journalism and the Media, R. Chadwick, Routledge, New York, 1994
9. Foundations of Environmental Ethics, Eugene C. Hargrove, Prentice Hall, New Jersey, 1989
10. Practical Ethics, Peter Singer, Cambridge University Press, Cambridge, 2011
11. Principles of Bio-medical Ethics, J.F. Chidrese & T.L. Beauchamp, Oxford University Press, New York, 1989
12. R. Chadwick, 'Professional Ethics,' Routledge Encyclopaedia of Philosophy (ed. Edward Craig), Version 1.0, Routledge, London, 1998
13. The Rational Foundation of Ethics, T.L.S. Sprigge, Routledge, London, 1997
14. The Routledge Handbook of Mass Media Ethics, L. Wilkins and, C.G. Christians, Routledge, New York, 2020
15. A Companion to Applied Philosophy, Lippert-Rasmussen, K., Brownlee, K., & Coady, D. (Eds.). Wiley-Blackwell, West Sussex, 2016

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSM-324	विज्ञान का दर्शन	5	1	0	6	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 व्याख्यान/घंटा

1. **पाठ्यक्रम उद्देश्य:** यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र से जुड़े दार्शनिक मुद्दों से परिचित कराएगा।
2. **अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, छात्र वैज्ञानिक ज्ञान की प्रकृति और उससे जुड़े बौद्धिक मुद्दों को समझ सकेंगे।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, विद्यार्थियों से निम्नलिखित बातों की अपेक्षा है:

- (i) वैज्ञानिक ज्ञान की प्रकृति से जुड़ी मुख्य समस्याओं को समझना
- (ii) विज्ञान और गैर-विज्ञान के बीच अंतर करना
- (iii) वैज्ञानिक यथार्थवाद, आगमन और वैज्ञानिक प्रामाणिकता से जुड़ी समस्याओं को समझना
- (iv) मिथ्यापनीयता, अतुलनीयता और प्रतिमान-परिवर्तन की अवधारणाओं को समझना
- (v) विज्ञान के भविष्य को आकार देने वाली अवधारणाओं का मूल्यांकन करना

विषय वस्तु

इकाई 1

विज्ञान और विज्ञान का दर्शन

विज्ञान के दर्शन में परंपरागत समस्याएं

सीमांकन की समस्या: विज्ञान और गैर-विज्ञान

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2

वैज्ञानिक यथार्थवाद, साधनतावाद, रचनात्मक अनुभववाद

वैज्ञानिक सिद्धांतों की पुष्टि

ह्यूम की आगमन की समस्या

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3

कार्ल पॉपर का मिथ्यापनीयता का सिद्धांत

लुकाटोस: वैज्ञानिक शोध कार्यक्रम

कून: प्रतिमान और प्रतिमान परिवर्तन

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4

फायरबायंड: ज्ञानमीमांसीय अराजकतावाद

तकनीकी-विज्ञान की दार्शनिक समस्या

कृत्रिम बुद्धि की दार्शनिक समस्या

(18 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5:

मूल्य, विज्ञान और वस्तुनिष्ठता
 वैज्ञानिक यथार्थवाद और सामाजिक विज्ञान
 विज्ञान के दर्शन में नारीवादी दृष्टिकोण

(18 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. वैज्ञानिक दर्शन का उदय, हेन्स राइखेनबाख, (अनु. अनन्त मराल शास्त्री), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2020
2. An Enquiry Concerning Human Understanding, David Hume, The Open Court Publishing Company, Chicago, 1900
3. An Introduction to Philosophy of Science: Theory and Reality, Peter Godfrey-Smith, University of Chicago Press, Chicago, 2003
4. Introduction to the philosophy of science, M. H. Salmon et. al., Prentice Hall, 1992
5. Philosophy of Science in the Twentieth Century: four central themes, D. Gilles, Blackwell Publishers Oxford, 1993
6. Philosophy of Science: the central issues, M. Curd and J. A. Cover, W. W. Norton and Company, 1998
7. Readings in the Philosophy of Science, Herbert Feigl, May Brodbeck (eds.) Appleton-Century-Crofts Inc., New York, 1953
8. Scientific knowledge: basic issues in the philosophy of science, J. Kourany, Wadsworth Publishing, 1997
9. The Routledge Handbook of Feminist Philosophy of Science, Sharon Crasnow & Kristen Intemann, Routledge, London, 2020

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSM-324	Philosophy of Science	5	1	0	6	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

90 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** The course will introduce students to the philosophical issues related to the domain of modern science
- 2. Course Learning Outcomes:** After undergoing this course, the students will gain understanding of the nature of scientific knowledge and associated intellectual issues.

After successful completion of this course, the students shall be able to:

1. Understand the central problems regarding the nature of scientific knowledge
2. Differentiate between science and non-science
3. Understand problems associated with scientific realism, induction and confirmation
4. Grasp the notions of falsifiability, incommensurability, and paradigm-shift
5. Appreciate the concepts which shaped the future of science

Course Content

Unit I

Science and Philosophy of Science

Classic Issues in Philosophy of Science

The Problem of Demarcation: Science and Non-science (18 Lectures/hours)

Unit II

Scientific Realism, Instrumentalism, Constructive Empiricism

Confirmation of Scientific Theories

Hume's Problem of Induction (18 Lectures/hours)

Unit III

Karl Popper's Theory of Falsification

Lakatos: Scientific Research Programmes

Kuhn: Paradigm and Paradigm Shift (18 Lectures/hours)

Unit IV

Feyerabend: Epistemological Anarchism

Philosophical issues of Technoscience

Philosophical issues of Artificial Intelligence (18 Lectures/hours)

Unit V

Values, Science and Objectivity

Scientific Realism and Social Science

Feminist Approaches in Philosophy of Science (18 Lectures/hours)

Essential Readings:

1. An Enquiry Concerning Human Understanding, David Hume, The Open Court Publishing Company, Chicago, 1900
2. An Introduction to Philosophy of Science: Theory and Reality, Peter Godfrey-Smith, University of Chicago Press, Chicago, 2003
3. Introduction to the philosophy of science, M. H. Salmon et. al., Prentice Hall, 1992
4. Philosophy of Science in the Twentieth Century: four central themes, D. Gilles, Blackwell Publishers Oxford, 1993
5. Philosophy of Science: the central issues, M. Curd and J. A. Cover, W. W. Norton and Company, 1998
6. Readings in the Philosophy of Science, Herbert Feigl, May Brodbeck (eds.) Appleton-Century-Crofts Inc., New York, 1953
7. Scientific knowledge: basic issues in the philosophy of science, J. Kourany, Wadsworth Publishing, 1997
8. The Routledge Handbook of Feminist Philosophy of Science, Sharon Crasnow & Kristen Intemann, Routledge, London, 2020

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSE-321	अधिनीतिशास्त्र	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के द्वारा भाषा दार्शनिकों द्वारा नैतिक निर्णयों के विश्लेषण का बोध कराया जायेगा।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी अधिनीतिशास्त्र के मौलिक सिद्धान्तों से परिचित होगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- अधिनीतिशास्त्र के स्वरूप तथा तथ्य-मूल्य सम्बन्धी विचार से परिचित होगा।
- अधिनीतिशास्त्र के वर्गीकरण का आधार जानेगा।
- प्रकृतिवाद एवं निर्प्रकृतिवाद से सम्बन्धित चिन्तकों के विचारों का बोध प्राप्त करेगा।
- संवेगवाद एवं परामर्शवाद के अन्तर्गत नैतिक निर्णयों के विवेचन से परिचित होगा।
- नव्य-प्रकृतिवादी चिन्तकों के विचारों से परिचित होगा।

विषय वस्तु

इकाई 1: अधिनीतिशास्त्र का स्वरूप और क्षेत्र

अधिनीतिशास्त्र की परिभाषा
अधिनीतिशास्त्र और मानकीय नीतिशास्त्र
अधिनीतिशास्त्र की मूल समस्याएँ
अधिनीतिशास्त्र का उद्भव और विकास
तथ्य और मूल्य में सम्बन्ध

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: अधिनैतिक सिद्धान्तों का वर्गीकरण

संज्ञानवाद और असंज्ञानवाद
प्रकृतिवाद और निर्प्रकृतिवाद
अतीन्द्रिय सत्ता सम्बन्धी सिद्धान्त
संवेगवाद और परामर्शवाद

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: प्रकृतिवाद और निर्प्रकृतिवाद

प्रकृतिवाद - आधारभूत मान्यताएँ, स्वरूप मुख्य समस्याएँ
निर्प्रकृतिवाद - आधारभूत मान्यताएँ, स्वरूप मुख्य समस्याएँ
जी.ई.मूर
एच.ए.प्रिचर्ड
डब्ल्यू.डी.रॉस

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: संवेगवाद और परामर्शवाद

संवेगवाद - आधारभूत मान्यताएँ, उद्भव और विकास
रुडोल्फ कार्नेप
ए.जे.एयर

सी.एल. स्टीवेन्सन

परामर्शवाद - आधारभूत मान्यताएँ

आर.एम. हेयर

पी.एच. नॉवल स्मिथ

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: नव्य-प्रकृतिवाद

आधारभूत मान्यताएँ

पी.टी. गीच

फिलिपा फ़ुट

जी.जे. वारनॉक

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. अधि-नीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धान्त, वेद प्रकाश वर्मा, ऍलाइड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2016
2. नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग), नित्यानन्द मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2004

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSE-321	Metaethics	3	1	0	4	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 lectures/hours

- Learning Objectives:** Through this course, the students will be given an understanding of the analysis of moral decisions by language philosophers.
- Course Learning Outcomes:** By studying this course, the students will become familiar with the fundamental principles of ethics.

After successfully completing this course, the students

- Will be familiar with the nature of ethics and ideas related to fact and value.
- Know the basis of classification of metaethics.
- Will gain understanding of the ideas of thinkers related to naturalism and non-naturalism.
- Will be familiar with the analysis of moral decisions under emotivism and prescriptivism.
- Will be familiar with the ideas of neo-naturalist thinkers.

Course Content

Unit I: Nature and scope of Metaethics

Definition of Ethics

Metaethics and Normative Ethics

Basic Problems of Metaethics

Origin and Development of Metaethics

Relationship between Fact and Value

(12 lectures/hours)

Unit II: Classification of Metaethical Theories

Cognitivism and Non-cognitivism

Naturalism and Non-naturalism

Transcendental Reality Theory

Emotivism and Prescriptivism

(12 lectures/hours)

Unit III: Naturalism and Non-naturalism

Naturalism – Basic Presuppositions, Nature, Main problems

Non-naturalism - Basic Presuppositions, Form, Main problems

G. E. Moore

H. A. Prichard

W. D. Ross

(12 lectures/hours)

Unit IV: Emotivism and Prescriptivism

Emotionalism – Basic Presuppositions, Origin and Development

Rudolf Carnap

A. J. Ayer

C. L. Stevenson

Prescriptivism – Basic presuppositions

R. M. Hare

P. H. Nowell-Smith

(12 lectures/hours)

Unit V: Neo-naturalism

Basic presuppositions

P. T. Geach

Philippa Foot

G. J. Warnock

(12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. Language, Truth and Logic, A.J. Ayer, Dover Publications, New York, 1952
2. Metaethics: An Introduction, Andrew Fisher, Routledge, New York, 2011.
3. The Oxford Handbook of Ethical Theory, (ed.) David Copp., Oxford University Press, New York, 2006
4. Moral Reasons, Jonathan Dancy, Oxford: Blackwell, 1993
5. Moral Beliefs, Philippa Foot, Proceedings of the Aristotelian Society, 59: 83–104. doi:10.1093/aristotelian/59.1.83, 1959
6. Natural Goodness, Philippa Foot, Clarendon Press, Oxford, 2001
7. The Language of Morals, R. M. Hare, Clarendon Press, Oxford, 1952
8. Ethics: Inventing Right and Wrong, (Pelican Books), J. L. Mackie, Harmondsworth/New York: Penguin. 1977
9. Principia Ethica, G. E. Moore, Cambridge University Press, Cambridge, 1903
10. The Right and the Good, W. D. Ross, Clarendon Press, Oxford, 1930
11. Ethics and the Limits of Philosophy, Bernard Williams, Harvard University Press, 1985
12. Arguing about Metaethics, Andrew Fisher and Simon Kirchin, (eds.), Routledge Press, 2006

Suggested Readings:

1. An Introduction to Ethics, William Lille, Jyoti Enterprises, Delhi, 2021
2. Moral Philosophy: Selected Readings. 2nd ed. Edited by George Sher. Harcourt-Brace: Fort Worth, TX, 1996.
3. Moral Relativism and Moral Objectivity, Gilbert Harman, and J.J. Thomson, Blackwell Publishers, 1996
4. An Introduction to Contemporary Metaethics, Alexander Miller, Polity Press, 2003
5. Oxford Studies in Metaethics, Russ Shafer-Landau (ed.) Vol. 1-5. Oxford University Press, 2001-2010

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-GE-321	भारतीय तर्कशास्त्र	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

- पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थियों में भारतीय तर्क परम्परा के मौलिक सिद्धान्तों एवं प्रयोग के प्रति चेतना जगायी जायेगी।
- अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय तर्क पद्धति एवं प्रयोग से परिचित होगा।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- भारतीय तर्कशास्त्र एवं पाश्चात्य तर्कशास्त्र की समानता-असमानता से परिचित होगा।
- अनुमान प्रमाण का बोध प्राप्त करेगा।
- में व्याप्ति सम्बन्धी चर्चा की समझ आयेगी।
- तर्क पद्धति में संभावित त्रुटियों का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करेगा।
- को आगमन की समस्या का बोध होगा।

विषय वस्तु

इकाई 1: भारतीय तर्कशास्त्र की प्रकृति एवं विशेषताएँ

भारतीय तर्कशास्त्र और पाश्चात्य तर्कशास्त्र में अन्तर
 भारतीय तर्कशास्त्र एवं भारतीय प्रमाणशास्त्र में सम्बन्ध
 भारतीय तर्कशास्त्र एवं भारतीय तत्त्वशास्त्र में सम्बन्ध

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2: भारतीय दर्शन में अनुमान (न्याय, नव्यन्याय, वेदान्त, बौद्ध एवं जैन मत)

अनुमान की परिभाषा एवं स्वरूप
 अनुमान के घटक एवं अवयव
 अनुमान के प्रकार
 अनुमान का मनोवैज्ञानिक आधार, पक्षधर्मता

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3: अनुमान का तार्किक आधार : व्याप्ति (प्राचीन न्याय-वैशेषिक, नव्य न्याय, वेदान्त, बौद्ध एवं जैन मत)

व्याप्ति की परिभाषा एवं स्वरूप
 व्याप्ति के भेद
 व्याप्तिग्रहोपाय

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4: हेत्वाभास : परिभाषा एवं प्रकार

न्याय-वैशेषिक मत
 बौद्ध मत
 जैन मत

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5: भारतीय तर्कशास्त्र में निहित आगमन के तत्त्व

चार्वाक द्वारा अनुमान प्रमाण का खण्डन

आगमन की समस्या का भारतीय दार्शनिक समाधान

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. न्याय-प्रवेश-सूत्रम्, लक्ष्मी मोर, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2000
2. न्याय दर्शन - सम्पादक अम्बिकादत्त शर्मा एवं सच्चिदानन्द मिश्र, डी.के.प्रिंटवर्ल्ड 2016
3. वात्सयायन भाष्य, हिन्दी अनुवाद, सच्चिदानन्द मिश्र, विद्याभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. भारतीय तर्कशास्त्र, एन.पी. तिवारी, पी.एच.आई. लर्निंग प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2009
5. भारतीय तर्कशास्त्र परिचय, केदारनाथ तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2016
6. न्यायदर्शन में अनुमान, सच्चिदानन्द मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2006

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. बौद्ध प्रमाण दर्शन : प्रमाणशास्त्रीय सिद्धान्तों का अधिप्रामाण्य विश्लेषण, अम्बिकादत्त शर्मा, परिवर्द्धित एवं संशोधित संस्करण, डी.के. प्रिन्ट वर्ल्ड, नई दिल्ली, 2016
2. न्याय दर्शन में अनुमान, सच्चिदानन्द मिश्र, भारतीय विद्या भवन, दिल्ली, 2006

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-GE-321	Indian Logic	3	1	0	4	Internal Assessment	External Assessment	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** Through this course, students will be made aware of the fundamental principles and application of the Indian logic tradition.
- 2. Course Learning Outcomes:** By studying this course, the student will become familiar with the Indian logic system and its application.

After successfully completing this course, the students

- Will be familiar with the similarities and differences between Indian logic and Western logic.
- Inference will gain understanding of the proof.
- You will understand the discussion regarding coverage.
- Will acquire theoretical knowledge of possible errors in the reasoning method.
- Will be aware of the problem of arrival.

Course Content

Unit I: Nature and characteristics of Indian Logic

Difference between Indian Logic and Western Logic

Relationship between Indian Logic and Indian Pramāṇaśāstra

Relationship between Indian Logic and Indian Philosophy (12 lectures/hours)

Unit II: Inference in Indian Philosophy (Nyāya, Navyanyāya, Vedānta, Buddhism and Jainism)

Definition and form of Inference

Components and Steps of Inference

Kinds of Inference

Psychological Basis of Inference, Pakṣadharmatā (12 lectures/hours)

Unit III: Logical Basis of Inference –Vyāpti (Ancient Nyāya-Vaiśeṣika, Navyanyāya, Vedānta, Buddhism and Jainism)

Definition and Nature of Invariable Concomitance (vyāpti)

Kinds of Invariable Concomitance

Modes of the apprehension of Vyāpti (vyāptigrahopāya) (12 lectures/hours)

Unit IV: Hetvābhāsa: Definition and Kinds

Nyāya-Vaiśeṣika

Buddhism

Jainism (12 lectures/hours)

Unit V: Elements of Induction inherent in Indian Logic

Refutation of Inference by Cārvāka

Indian Philosophical solution to the Problem of Induction (12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. The Character of Logic in India, Bimal Krishna Matilal, Edt. Jonardon Ganeri, Heeraman Tiwari, State University of New York Press, 1998
2. Gautama's Nyayasutras (with Vatsyayan Bhashya), Ganganath Jha, Oriental Book Agency Poona, 1939
3. The Dispeller of Disputes: Nagarjuna's Vigrahavyavartani, Jan Westerhoff, Oxford University Press, USA, 2010
4. Vada in Theory and Practice: Studies in Debates, Dialogues and Discussion in Indian Intellectual Discourse, Radhavallabh Tripathi, D.K. Printworld, Delhi, 2021
5. Logic, Language and Reality (Indian Philosophies and Contemporary Issues): Indian Philosophy and Contemporary Issues, MLBD, 2017
6. The Elements of Indian Logic, B.L. Atreya, Darshan Printers, Moradabad, 1962

Suggested Readings:

1. A Modern Introduction to Indian Logic, S.S. Barlingay, National Publishing, Delhi, 1975
2. A History of Indian Logic, S.C. Vidyabhushan, MLBD, Delhi, 2006

सेमेस्टर IV

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C			
6.5	III	PHL-DSE-421	धर्म दर्शन	3	1	0	4	आन्तरिक मूल्यांकन	बाह्य मूल्यांकन	
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 व्याख्यान/घंटा

1. **पाठ्यक्रम उद्देश्य:** इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में धर्म की वास्तविकता, उसकी गम्भीरता एवं मानव जीवन में धर्म की उपयोगिता की समझ विकसित करना है।
2. **अपेक्षित अधिगम परिणाम:** इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में धर्म की वास्तविक समझ, उसकी गम्भीरता एवं मानव जीवन में धर्म की उपयोगिता की समझ विकसित हो जायेगी।

इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी

- (i) धर्म के उत्पत्ति विषयक विभिन्न सिद्धान्तों एवं इसकी विभिन्न अवस्थाओं से परिचित हो जायेगा।
- (ii) धार्मिक दर्शन के विभिन्न प्रकारों से परिचित हो जायेगा।
- (iii) को धार्मिक चेतना, धार्मिक ज्ञान एवं धार्मिक भाषा आदि के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो जायेगा।
- (iv) को धार्मिक सहिष्णुता और पंथनिरपेक्षता की आवश्यकता एवं उसके आशय का बोध हो जायेगा।
- (v) धर्म परिवर्तन, धर्मान्तरण के कारण, सर्वधर्म समन्वय के भारतीय दृष्टिकोण से परिचित हो जायेगा।

विषय वस्तु

इकाई 1

धर्म, धर्मशास्त्र और धर्मदर्शन

आदिम धर्म, प्राकृतिक धर्म, मानवीय धर्म एवं आध्यात्मिक धर्म

ईश्वर की अवधारणाएँ: गुण, मनुष्य और जगत से संबंध (भारतीय और पाश्चात्य)

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 2

ईश्वर-संबंधी सिद्धांत: अनीश्वरवाद, एकेश्वरवाद, अनेकेश्वरवाद, केवलनिमित्तेश्वरवाद, सर्वेश्वरवाद, निमित्तोपादानेश्वरवाद

ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण और उनकी आलोचना (भारतीय और पाश्चात्य)

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 3

अशुभ की समस्या

आत्मा: अमरता, पुनर्जन्म और मुक्ति

तर्क, दैवी-प्रकाशना और आस्था

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 4

ईश्वरहीन धर्म

धर्म और नैतिकता

धार्मिक सहिष्णुता

धर्मनिरपेक्षता (भारतीय और पश्चिमी)

(12 व्याख्यान/घंटा)

इकाई 5

धर्मांतरण की समस्या

सार्वभौमिक धर्म की अवधारणा

धार्मिक भाषा का स्वरूप: सादृश्यमूलक और प्रतीकात्मक, संज्ञानात्मक और गैर-संज्ञानात्मक

(12 व्याख्यान/घंटा)

आधारभूत पुस्तकें:

1. धर्म दर्शन की रूपरेखा - लक्ष्मीनिधि शर्मा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
2. धर्म दर्शन: याकूब मसीह, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
3. धर्म दर्शन की मूल धारारें - वेद प्रकाश वर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1995
4. धर्म दर्शन की रूपरेखा - हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1962
5. धर्म-दर्शन, ऋषिकान्त पाण्डेय, पियर्सन, दिल्ली, 2016
6. धर्म दर्शन की रूपरेखा: हृदय नारायण मिश्र, ज्ञानपुर, वाराणसी

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. धर्म दर्शन दुर्गादत्त पाण्डेय, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद
2. धर्म दर्शन राजेन्द्र प्रकाश पाण्डेय, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
3. धर्म दर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन: डॉ. शिवभानु सिंह, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

Semester-IV

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C	Internal Assessment		External Assessment
6.5	IV	PHL-DSE-421	Philosophy of Religion	3	1	0	4	Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

60 lectures/hours

- 1. Learning Objectives:** The objective of this course is to develop students' understanding of the reality of religion, its seriousness and the utility of religion in human life.
- 2. Course Learning Outcomes:** Through this course, students will develop a real understanding of religion, its seriousness and the utility of religion in human life.

After successfully completing this course, the students

- Will become familiar with various theories regarding the origin of religion and its various stages.
- Will become familiar with different types of religious philosophy.
- Will become aware of the real nature of religious consciousness, religious knowledge and religious language etc.
- Will understand the need and meaning of religious tolerance and secularism.
- Due to religious conversion, it will be realized from the Indian perspective of coordination of all religions.

Course Content

Unit I:

Religion, Theology and Philosophy of Religion

Primitive Religion, Natural Religion, Human Religion and Spiritual Religion

Notions of God: Attributes; Relation to Human and the World (Indian and Western)

(12 lectures/hours)

Unit II:

Various Theories related to God: Atheism, Monotheism, Polytheism, Deism, Pantheism, Panentheism

Proofs for the Existence of God and their Critique (Indian and Western) (12 lectures/hours)

Unit III:

Problem of Evil

Soul: Immortality; Rebirth and Liberation

Reason, Revelation, and Faith

(12 lectures/hours)

Unit IV:

Religion without God

Religion and Morality

Religious Tolerance

Secularism (Indian and Western)

(12 lectures/hours)

Unit V:

Problem of Religious Conversion

The Concept of Universal Religion

Nature of Religious Language: Analogical and Symbolic, Cognitive and Non-cognitive

(12 lectures/hours)

Essential Readings:

1. Philosophy of Religion: John Hick, Prentice Hall, New Delhi, 1990
2. The God Delusion, Richard Dawkins, Black Swan, 2007
3. Philosophy of Religion: D.M. Edward, Oxford University, 1924
4. Introducing Philosophy of Religion, Chad Meister, Routledge, 2009.
5. A Companion to Philosophy of Religion, Philip L. Quinn and Charles Taliaferro (eds.), Blackwell Publishers, 1999.

Suggested Readings:

1. Dharma: The Categorical Imperative, Ashok Vohra et. al, D.K. Printworld Pvt. Ltd., 2005.
2. Issues in Contemporary Philosophy of Religion, Eugene Thomas Long (ed.), Kluwer Academic Publishers, Dordrecht, 2001.
3. An Introduction to Philosophy of Religion, Michael J. Murray and Michael Rea, Cambridge University Press, New York, 2008.
4. Nyāyakusumāñjali of Udayana, N. S. Dravid, ICPR, New Delhi, 1996.

लेवल	सेमेस्टर	विषय कोड	विषय शीर्षक	क्रेडिट				अंक		
				L	T	P	C	आन्तरिक मूल्यांकन		बाह्य मूल्यांकन
6.5	IV	PHL-DSM-423	शोध-निबन्ध	0	16	0	16	Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

पाठ्यक्रम उद्देश्य: इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को दर्शनशास्त्र में एक औपचारिक शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा तैयार करने और उसे लिखने के लिए आवश्यक कार्यप्रणाली अनुसंधान प्रथाओं और संरचनात्मक आवश्यकताओं का प्रशिक्षण देना है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम: इस पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, छात्र एक उचित प्रारूप में और शैक्षणिक रूप से सुदृढ़ दार्शनिक शोध-प्रबन्ध तैयार करने में सक्षम होंगे।

- दार्शनिक लेखों और ग्रंथों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन और विश्लेषण करना।
- विभिन्न दार्शनिक तर्कों की अंतर्निहित संरचना को पहचानना, उन्हें विघटित करना और उनका आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।
- मौजूदा दार्शनिक साहित्य की व्यापक समीक्षा करना, मुख्य बहसों को रेखांकित करना और शोध के अंतरालों की पहचान करना।
- मौलिक, तार्किक रूप से सुदृढ़ और अच्छी तरह से समर्थित दार्शनिक तर्कों को तैयार करना।
- अपने शोध निष्कर्षों और मौलिक विचारों को मिलाकर एक सुसंगत, सुव्यवस्थित और पेशेवर रूप से तैयार दस्तावेज प्रस्तुत करना।

विषय वस्तु

इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत, छात्रों को विभाग के किसी शिक्षक के पर्यवेक्षण में एक विशिष्ट दार्शनिक समस्या पर कार्य करना होगा। वे अपने पर्यवेक्षक के परामर्श से अपनी शोध समस्या का चयन कर सकते हैं। उन्हें एक उचित प्रारूप में शोध-प्रबन्ध तैयार करना होगा।

मूल्यांकन

शोध प्रबन्ध की संरचना – 80

प्रस्तुतीकरण – 20

कुल – 100 अंक

प्रस्तावित अध्ययन :

विद्यार्थी द्वारा चुने गये शोध शीर्षक की आवश्यकतानुसार

Level	Semester	Course Code	Course Title	Credits				Marks		
				L	T	P	C			
6.5	IV	PHL-DSM-423	Dissertation	0	16	0	16	Internal Assessment		External Assessment
								Mid-I (20)	Mid-II (20)	End Semester (60)

- 1. Learning Objectives:** Through this course, the students are to learn how to write a dissertation in philosophy.
- 2. Course Learning Outcomes:** After undergoing this course, the student will be able to produce a dissertation in a proper format.

After successful completion of this course, the students shall be able to

1. Study philosophical writings by themselves
2. Understand the structure of philosophical arguments
3. Review philosophical literature
4. Formulate philosophical arguments
5. Produce a coherent document of the study

Course Content

In this course, the students are required to work on a specific philosophical problem under the supervision of a faculty member. They can choose their research problem in consultation with their supervisor. They are required to produce a dissertation in a proper format.

Evaluation:

Thesis Structure – 80

Presentation – 20

Total – 100 Marks

Suggested Readings:

As per the requirements of the research topic chosen by the student